संजय की कलम से ..

# रक्षा-बन्धन

मानव स्वभाव से ही स्वतंत्रता प्रेमी है अत: वह जिस बात को बंधन समझता है, उससे छूटने का प्रयत्न करता है। परंतु, 'रक्षा-बंधन' को बहनें और भाई, त्योहार अथवा उत्सव समझकर खुशी से मनाते हैं। यह एक न्यारा और प्यारा बंधन है।

बंधन दो प्रकार के होते हैं – एक तो ईश्वरीय और दूसरे सांसारिक अर्थात् कर्मों के बंधन। ईश्वरीय बंधन से मनुष्य को सुख मिलता है परंतु दूसरी प्रकार के बंधन से दुख की प्राप्ति होती है। रक्षा-बंधन ईश्वरीय बंधन, आध्यात्मिक बंधन अथवा धार्मिक बंधन है परंतु आज लोगों ने इसे एक लौकिक रस्म ही बना दिया है। जैसे आध्यात्मिकता और धर्म-कर्म के क्षीण हो जाने के कारण संसार की वस्तुओं से अब सत् अथवा सार निकल गया है वैसे ही आध्यात्मिकता को निकाल देने से इस त्योहार से भी सत् अथवा सार निकल गया है वरना यह त्योहार बहुत ही महत्त्वपूर्ण और उच्च कोटि का त्योहार है।

### बहनें, भाइयों से किस प्रकार की रक्षा चाहती हैं

भारत देश अपनी फिलासॉफी के लिए प्रसिद्ध है, इन त्योहारों के पीछे भी एक बहुत बड़ी फिलासॉफी अथवा ज्ञान है। रक्षा-बंधन के गूढ़ रहस्य को समझने के लिए पहले यह जानने की आवश्यकता है कि मनुष्य की सब प्रकार की रक्षा कैसे और किस द्वारा हो सकती है और बहनें अपने भाइयों से किस प्रकार की रक्षा चाहती हैं।

विचार करने पर आप इस निर्णय पर पहुँचेंगे कि प्रत्येक मनुष्य पाँच प्रकार की रक्षा चाहता है। तन की रक्षा, धर्म, सतीत्व अथवा पवित्रता की रक्षा, काल से, सांसारिक आपदाओं से और माया के विघ्नों से रक्षा। परंतु प्रश्न यह है कि क्या कोई भी मनुष्य इन पाँचों प्रकार की रक्षा करने में समर्थ है?

### तन की रक्षा

तन की रक्षा के लिए मनुष्य अनेक कोशिशें करता है परंतु फिर भी अंत में उसे यही कहना पड़ता है कि जिसकी मौत आई हो उसे कोई नहीं बचा सकता अर्थात् 'भावी टालने से नहीं टलती।' इस सिद्धांत की पुष्टि के लिए अनेक वृत्तांत प्रसिद्ध हैं।

### धर्म की, पवित्रता की अथवा सतीत्व की रक्षा

कई लोगों का कहना है कि मुसलमानों के शासन काल में बहनें, भाइयों को इसलिए रक्षा-बंधन

## अमृत-सूची


- मैं कौन? *(सम्पादकीय)*..... 5
- भगवान मेरा सर्जन बन गया.... 7
- पुरुषोत्तम संगमयुग और..... 8
- प्रश्न हमारे, उत्तर आपके..... 11
- 'पत्र' संपादक के नाम..... 13
- मैं कहता हूँ आँखों देखी..... 14
- वाह ड्रामा वाह *(कविता)*..... 15
- प्यार की देवी-दादी जी..... 16
- जितना सुना, उससे अधिक... 17
- त्याग नहीं, भाग्य..... 18
- बचिए व्यर्थ विचारों से..... 19
- वरदानीमूर्त दादी जी..... 20
- ब्रह्मचर्यम् परम् बलम्..... 21
- ओमशांति का महामंत्र..... 23
- बाबा से मिला स्नेह..... 25
- सहज जीवन..... 27
- चौरासी जन्म सफल हुए..... 28
- मोह भंग हुआ तो मिला..... 29
- सचित्र सेवा समाचार..... 30
- जन्मदिन की सौगात..... 32
- निर्विकल्प ही *(कविता)*..... 33
- पवित्रता ही पात्रता..... 33
- सचित्र सेवा समाचार..... 34



**नये सदस्यता शुल्क**

| भारत | वार्षिक | आजीवन |
|---|---|---|
| ज्ञानामृत | 80 /- | 2,000/- |
| वर्ल्ड रिन्युअल | 80/- | 2,000/- |
| **विदेश** | | |
| ज्ञानामृत | 750 /- | 8,000/- |
| वर्ल्ड रिन्युअल | 750/- | 8,000/- |

शुल्क केवल '**ज्ञानामृत**' अथवा '**द वर्ल्ड रिन्युअल**' के नाम से ड्राफ्ट या मनीऑर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है- संपादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन- 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

**- शुल्क के लिए सम्पर्क करें - 09414006904, 09414154383**

बाँधती थीं कि यदि मुसलमान उनके सतीत्व पर आक्रमण करे तो भाई उनकी रक्षा करें। परंतु मनुष्य सर्वसमर्थ तो है नहीं, न जाने कितनी बहनों-माताओं की लाज लुटी होगी। दुष्टों से पवित्रता की रक्षा भी वास्तव में सर्वसमर्थ परमपिता परमात्मा ही कर सकते हैं इसलिए आख्यान प्रसिद्ध है कि कौरवों की भरी सभा में जब द्रौपदी का चीर हरण होने लगा तो द्रौपदी ने भगवान ही को पुकारा था क्योंकि तब कोई भी मित्र या संबंधी उसकी रक्षा न कर सका था। इसलिए ऐसी आपदा के समय लोग भगवान ही को संबोधित करके कहते हैं – 'हे प्रभु! हमारी लाज रखो, हमारे धर्म की रक्षा करो भगवन्!' अत: नि:संदेह भगवान ही हैं जो माताओं-बहनों के 'चीर बढ़ाते' हैं अर्थात् उनके सतीत्व और धर्म की रक्षा करते हैं। इसी कारण दुख के समय मनुष्य के मुख से ये शब्द निकलते हैं – 'हे प्रभु, मुझे सहारा दो।'

### काल के पंजे से रक्षा

मनुष्य तो स्वयं भी कालाधीन है। बड़े-बड़े योद्धाओं को भी आखिर काल खा जाता है। सिकन्दर का भी उदाहरण हमारे सामने है। उसने अनेकानेक सैनिकों को मारा और मरवाया परंतु स्वयं को काल से नहीं बचा सका। निश्चय ही काल के पंजे से छुड़ाने वाले भी एक परमात्मा ही हैं जिन्हें 'कालों का काल', 'महाकाल', 'अमरनाथ', 'महा कालेश्वर' अथवा 'प्राणनाथ' भी कहा जाता है। अत: काल से बचने के लिए मनुष्य मृत्युंजय का पाठ करते हैं अर्थात् परमात्मा शिव ही की शरण में जाने की कामना करते हैं। जनश्रुति है कि जिस मनुष्य ने अच्छे कर्म किए होते हैं, उसकी मृत्यु होने पर जब यमदूत आते हैं तो भगवान के पार्षद उन यमदूतों को भगा देते हैं। वास्तव में, परमात्मा की रक्षा मिलने से ही मनुष्य यमदूतों से बच सकते हैं और मृत्यु पर विजय प्राप्त कर सकते हैं। परमात्मा ही अजेय हैं और उन्हीं की महिमा में कहा जाता है कि 'जाको राखे साइयाँ, मार सके न कोय। बाल न बाँका कर सके, चाहे सब जग बैरी होय।'

### सांसारिक आपदाओं से रक्षा

सदा के लिए दुखों अथवा संकटों से भी एक परमात्मा ही रक्षा दे सकते हैं, कोई भी मनुष्यात्मा यह कार्य नहीं कर सकती। परमात्मा को ही 'संकट मोचन', 'दुख भंजन' और 'सुखदाता' कहते हैं। परमात्मा ही काल और कंटक दूर करने वाले हैं। उन्हें ही 'हरि' अथवा 'हरा' अर्थात् 'दुख एवं संकट हरने वाला' तथा दुखभंजक माना जाता है। प्रकृति तो उनकी दासी ही है।

### माया के विघ्नों से रक्षा

माया के बंधन से भी परमात्मा ही छुड़ाते हैं, तभी तो मनुष्य परमात्मा को पुकार कर कहते हैं – 'विषय-विकार मिटाओ, पाप हरो देवा।' गज और ग्राह का जो प्रसंग प्रसिद्ध है, वह भी इसी रहस्य को स्पष्ट करता है कि जब ग्राह, गज को निगलने ही वाला था तो भगवान ही ने ऐसे समय उसकी रक्षा की। गज ने फूल तोड़कर अपनी सूंड ऊपर की तो भगवान ने यह देखकर कि वह पुष्प चढ़ा रहा है अर्थात् याद कर रहा है, उसकी रक्षा का संकल्प किया। वास्तव में आध्यात्मिक अर्थ में ज्ञानी मनुष्य ही गज है, माया ही एक ग्राह है, यह संसार एक सागर है और कमल रूपी पुष्प अलिप्त जीवन का सूचक है।

अत: आख्यान का भाव यह है कि माया के आघातों से भगवान ही ज्ञानवान मनुष्यों की रक्षा करते हैं। ज्ञान ही स्वदर्शन चक्र है जिससे माया का गला कट जाता है और परमात्मा ही सभी के रक्षक हैं। इसी कारण गीता में यह महावाक्य है कि साधुओं का भी परित्राण करने वाले परमात्मा ही हैं।

**(शेष.. पृष्ठ 10 पर)**

जून अंक से आगे..

सम्पादकीय ..✍

# मैं कौन?

जब आत्मा देह का त्याग कर देती है तो देह के अंग-प्रत्यंग निष्क्रिय हो जाते हैं। आँखें हैं पर देख नहीं पाती; गुर्दा, मस्तिष्क, फेफड़े आदि सब अंग ठीक-ठाक होते हुए भी काम करना बंद कर देते हैं। इसका अर्थ यही हुआ कि इनका उपयोगकर्त्ता मालिक चला गया। इन्हीं आँखों को निकालकर किसी दूसरे व्यक्ति में प्रत्यारोपित कर दिया जाये तो दूसरा व्यक्ति भली-भाँति देखने लगता है। अन्य अंगों या हड्डियों का भी, दूसरे शरीरों में सफल प्रत्यारोपण हो जाता है। मालिक के चले जाने पर जैसे, मकान लावारिस हो जाता है। या तो मकड़ी, चींटे, चूहे उसे गंदा करते रहते हैं या फिर लोग उसके दरवाज़े, खिड़कियाँ, रोशनदान आदि निकालकर दूसरे मकानों में लगा लेते हैं। इसी प्रकार, आत्मा के जाते ही बैक्टीरियाज़ के विघटन से शरीर बदबूदार होने लगता है या इस विघटन से पहले ही इसके अंग निकाल कर अन्यत्र प्रत्यारोपित कर लिये जाते हैं।

### शरीर है पाँच तत्वों का संयोजन

चीनी, घी, पानी, अग्नि, बेसन आदि पदार्थों को आपस में मिलाकर जैसे हम लड्डू बनाते हैं। मिश्रित पदार्थों को अग्नि के सहयोग से पकाकर बनाया गया यह लड्डू अपने निर्धारित समय के बाद अवश्य बिगड़ जाता है। यदि चीनी, पानी, बेसन अलग-अलग रहें तो कई दिनों तक ठीक पड़े रहते हैं पर मिश्रित होते ही सड़ जाते हैं इसी प्रकार जल, वायु, अग्नि, पृथ्वी, आकाश अलग-अलग अपने कार्य को सुचारु रूप से चलाते हैं परन्तु शरीर रूप में इनका संयोजन, आत्मा की उपस्थिति से ही सुचारु रहता है, उसके निकलते ही यह संयोजन बदबू में बदल जाता है।

### आत्मा है गुठली की तरह

कहा जाता है, जो बना है, वह एक दिन बिगड़ेगा भी। शरीर बना है तो मिटेगा भी। आत्मा न बनी, न मिटेगी अर्थात् अनादि है। इसका न आदि है, न अंत है। जैसे आम (या अन्य भी कोई फल) के ऊपरी भाग में गुद्दा होता है, रस और मिठास होता है, इसके नीचे गुठली छिपी रहती है। हम फल को कितना भी संभालें, कुछ समय बाद उसका गुद्दा सड़ने लगता है, रस सूख जाता है या बदबूदार हो जाता है और छिलका काला पड़ जाता है पर अंदर की गुठली सुरक्षित रहती है, उसे पुनः उगाया जा सकता है। इसी प्रकार समय के साथ-साथ मानव शरीर का रंग-रूप भी बिगड़ने लगता है पर आत्मा पर समय का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। यह अशक्त शरीर को छोड़ नये शरीर में प्रवेश कर उसके पोषण में लग जाती है। जैसे पुराना गुद्दा उतर जाने के बाद आम की गुठली नये पेड़ को अंकुरित कर लेती है।

### चमड़े में बन्द हीरा

पुराने ज़माने में, आजकल की तरह प्लास्टिक या कपड़े की चीज़ें उपलब्ध नहीं थीं। बहुधा चमड़े के थैलों का प्रयोग होता था। व्यापारी लोग स्वर्ण मुद्राएँ अथवा चाँदी के सिक्के या हीरे-मोती आदि चमड़ा निर्मित चीज़ों में सुरक्षित रखते थे। अब देखा जाये तो यह शरीर भी चमड़े का थैला ही है और आत्मा रूपी हीरा इसमें सुरक्षित है। इस हीरे के प्रकाश से यह थैला भी प्रकाशमान अर्थात् तेज और ओज से संपन्न है।

### झूठी काया, झूठी माया

इस संसार में, उत्तम श्रेणी की चीज़ें गारंटीशुदा होती हैं। जैसे, अच्छी कंपनियाँ अपने उत्पाद पर एक वर्ष, दो वर्ष या पाँच वर्ष तक की भी गारंटी देती हैं परन्तु मानव शरीर ऐसा उत्पाद है जिसकी सेकंड भर की भी गारंटी नहीं है। इसलिए इसे झूठा कहा गया है। गायन भी है, झूठी काया, झूठी माया, झूठा सब संसार। इस झूठे

शरीर में सत्य आत्मा का निवास है। शरीर भी झूठा (विनाशी) है, संसार भी झूठा है अत: ये दोनों एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते परन्तु आत्मा सत्य है जो सत्य परमात्मा की संतान है अत: परमात्मा को याद करती है, उसमें समा जाना चाहती है।

**मन तथा हृदय में अन्तर**

यदि कोई व्यक्ति अपराध कर देता है तो पुलिस उसे जीवित पकड़ना चाहती है, मृत को नहीं। यदि शरीर ही अपराध करता तो जीवित, मृत की कोई शर्त न होती। परंतु चूंकि शरीर तो अपराध का माध्यम बना, उसके द्वारा करने वाली तो आत्मा है, असली अपराधी आत्मा के चले जाने पर मात्र आवरण को पकड़ लेने से क्या प्रयोजन?

कई बार हम अपना हाथ हृदय की तरफ ले जाते हैं और कहते हैं, आज दिल बड़ा परेशान है, अच्छा-सा नहीं लग रहा है और कई बार कहते हैं कि दिल टूट-सा गया है, किसी कार्य में मन नहीं लग रहा है। यदि ऐसी अवस्था में हम डॉक्टर के पास जायें और वह शरीर की जाँच करे तो जाँच में कुछ भी नकारात्मक नहीं आता है। तो यह दर्द कहाँ है, परेशानी किस को है, दिल ठीक-ठाक है तो फिर टूट कौन गया है? यदि हम शरीर हैं और जाँच इस ढाँचे को ठीक कह रही है तो अस्वस्थ कौन है? वास्तव में यहाँ भी कारण यह है कि आत्मा को कोई बात परेशान कर रही है। आत्मा की चाहना के विपरीत कुछ घट गया है, उसे अपनी आशा टूटने का अहसास हो रहा है। हम कह रहे हैं, दिल टूटा है पर वास्तव में तो आत्मा की संजोई हुई आश अपूर्ण रह गई है। ऐसे में आत्म-ज्ञान के आधार पर आत्मा का इलाज ज़रूरी है। आत्मा के बदले शरीर का इलाज या शरीर को ठीक जानकर, आत्मा के भी ठीक-ठाक होने का भ्रम – दोनों स्थितियाँ हानिकारक हैं।

**कर्मों में निर्लिप्तता**

'मैं कौन हूँ', इस प्रश्न का उत्तर है, 'मैं सतोगुणी आत्मा हूँ।' आत्म-स्वरूप में टिकने से परमात्मा की स्मृति में रहना सहज हो जाता है। आत्मस्थ व्यक्ति कर्म करते भी, 'इन्द्रियाँ कार्य कर रही हैं, व्यवहार कर रही हैं', ऐसा समझकर उनसे न्यारा और सर्व का प्यारा बना रहता है। वह कर्मों से निर्लिप्त रहता है। जैसे माताएँ रसोई में काम करते समय गर्म बर्तन को सीधा हाथ से नहीं पकड़ती। कपड़े या संडासी का प्रयोग करती हैं, इसलिए जलन से बच जाती हैं। इसी प्रकार आत्मस्थ व्यक्ति कार्य और इंद्रियों के बीच में आत्म-स्मृति और परमात्म-स्मृति को रख लेता है जिससे कर्मों की जलन अर्थात् कर्मों के लेप-क्षेप से न्यारा रहता है।

**परिस्थितियों में अछूता**

आत्मस्वरूप का अनुभवी व्यक्ति आत्मा और शरीर की भिन्नता के अनुभव में खोया रहता है और स्वयं को देह से भिन्न मानते हुए साक्षी होकर सृष्टि रंगमंच पर पार्ट बजाता है। किसी के देह त्यागने पर उसे अनुभव होता है कि चमड़े का थैला ही तो गया है, हीरा तो अब भी मौजूद है, वह हाय-तौबा नहीं मचाता। अपनी मृत्यु का भय भी उस पर हावी नहीं हो पाता क्योंकि चमड़े के इस थैले को अंतिम रूप से त्यागने से पहले वह कई बार इससे निकलने का अनुभव कर चुका होता है। उसका मन, फर्श पर रहते भी अर्श की ओर लगा रहता है। जैसे पंछी पंख फैलाकर उडारी के लिए तैयार होता है, उसी प्रकार वह भी चहुँ ओर बिखरी स्मृतियों, वृत्तियों को समेटकर 'अब घर चलना ही है' इस अनुभव में टिका रहता है। जैसे उड़ान भर चुका पंछी, अपने पर फेंके गए पत्थर आदि से अछूता रह जाता है इसी प्रकार घर जाने की स्मृति रूपी उडारी लिए हुए आत्मा निन्दा-स्तुति, हानि-लाभ, मित्र-शत्रु, अपना-पराया आदि परिस्थितियों रूपी पत्थरों से पूरी तरह बच जाती है।

**'गूंगे का गुड़'**

**देह से न्यारेपन का अनुभव सर्व आध्यात्मिक अनुभवों का आधार है।**

इसी अनुभव में टिकने पर ईश्वर मिलन का, ईश्वरीय प्रेम का, ईश्वरीय शक्तियों का, ईश्वरीय गुणों का, ईश्वरीय संबंधों का, ईश्वरीय टचिंग का भी अनुभव होता है। जैसे डाली का कनेक्शन बीज से हो तो, बीज की सूक्ष्म शक्तियाँ अदृश्य रूप में डाली में भरती जाती हैं। इसी प्रकार, आत्मस्वरूप में टिके रहने से ही ईश्वर-बीज से संबंध बना रहता है और ईश्वरीय शक्तियाँ अदृश्य रूप में आत्मा में सन्निविष्ट होती जाती हैं। इस अनुभव के समक्ष सर्व भौतिक संपदा फीकी है। सर्व सांसारिक रंग, ऐसे रूहानी रंग के सामने बेरंग हो जाते हैं। इसे भक्ति में 'गूंगे का गुड़' कहा गया है। आत्मा इस अनुभूति का पूर्ण वर्णन नहीं कर सकती, आंशिक भले करे क्योंकि इस अनुभव के अनुकूल शब्द तो शब्दकोष में भी नहीं हैं। प्रभु की इस अनुपम अनुकम्पा का पात्र बनने के लिए अथवा यों कहें, प्रभु प्रदत्त इस अलौकिक अनुभूति की धरोहर को पाने के लिए हम आत्मस्थिति में ध्रुव स्मृति प्राप्त कर लें। जैसे ही देह में ध्यान जाये, अपने से पूछ लें, मैं कहाँ हूँ, क्या सोच रहा हूँ, क्या मैं स्वचिन्तन (आत्मचिन्तन) में हूँ या परचिन्तन (शरीर चिन्तन) में? आत्मचिंतन के अनुभवीमूर्त बनने से ही आत्मनियंत्रण, आत्म-शोधन और आत्मपरिवर्तन में सफलतामूर्त भी अवश्य बन जायेंगे।

**– ब्र.कु. आत्म प्रकाश**

# भगवान मेरा सर्जन बन गया

**ब्र.कु.बाला, टोहाना**

दो वर्ष पहले की बात है, मेरे गले में गांठ हो गई थी। गांठ बड़ी होती गई और दर्द बढ़ता गया। लगभग 25 दिन इस तकलीफ को हो गये थे, गांठ और बड़ी होती जा रही थी। बहनों ने कहा, किसी डॉक्टर को दिखा लेना चाहिए। मैंने मन ही मन संकल्प किया, डॉक्टर पता नहीं क्या-क्या बतायेगा, पहले मैं तीन दिन का योग करूँगी, अगर ठीक नहीं हुई तो डॉक्टर को दिखाऊँगी। सुबह 3 से 4 बजे तक मैं लाइट हाऊस की पावरफुल स्थिति में स्थित होकर सूक्ष्म वतन में बापदादा के साथ बैठ गई। सामने अपने शरीर को इमर्ज कर, उस गांठ पर बाबा और मैं सूर्य समान बहुत पावर से आधा घंटा किरणें डालते रहे। साथ में यह संकल्प भी रहा कि गांठ पिघलती जा रही है, किटाणु नष्ट होते जा रहे हैं।

दूसरे दिन गांठ अंदर जाने लगी, दर्द कम हो गया। तीसरे दिन गांठ बिल्कुल अंदर चली गई, दर्द समाप्त हो गया। चौथे दिन जब सुबह योग में बैठी तो सोचा, बीमारी ठीक हो गई है, अब दूसरे संकल्प से व दूसरे किसी लक्ष्य से योग करूँ। लेकिन बाबा की दृष्टि उस गांठ वाले हिस्से पर ही एकाग्र थी। मैं संकल्प बदलने की कोशिश करूँ परंतु बाबा मुझे दूसरे संकल्प से योग करने नहीं दें। बाबा मेरा ध्यान गांठ वाले हिस्से पर ही एकाग्र करवा देवें। फिर मैंने बाबा से जवाब माँगा, बाबा ने स्पष्ट जवाब दिया, बच्ची, पाँच दिन योग करना, डॉक्टर भी पाँच दिन की दवाई देता है। मैंने उसी संकल्प से, उसी विधि से, उसी लक्ष्य से लगातार पाँच दिन योग किया। वो गांठ, वो दर्द आज दिन तक जरा भी महसूस नहीं हुआ। सचमुच प्रैक्टिकल में भगवान मेरे डॉक्टर कैसे हैं, मैंने अच्छी तरह महसूस किया। दिल से बाबा सर्जन का लाख-लाख शुक्रिया भी किया। ❖

# पुरुषोत्तम संगमयुग और विश्व परिवर्तन का कार्य

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

ब्रह्मा-तन में अवतरण से पहले ही अग्रिम सूचना अर्थ प्राणप्यारे शिवबाबा ने आदरणीय ब्रह्मा बाबा को विश्व परिवर्तन का साक्षात्कार कराया। एक बार जब मुंबई में ब्रह्मा बाबा आये और हम संध्या वेला में उनके साथ घूमने निकले तो मैंने ब्रह्मा बाबा से पूछा कि आपको विनाश का साक्षात्कार कैसे हुआ? तब ब्रह्मा बाबा ने ऐसे वर्णन किया जैसे कि यह दृश्य उनकी आँखों के सामने ही घटित हो रहा हो।

उन्होंने कहा कि उस समय सारा ही आकाश टेलीविजन स्क्रीन जैसा बन गया और फिर दिव्य दृष्टि द्वारा शिवबाबा ने मुझे विनाश का साक्षात्कार कराया। पहले-पहले मैंने खून की नदियाँ बहते देखी अर्थात् विनाश का नज़ारा देखा। थोड़े समय के बाद वह दृश्य विलीन हो गया और बाद में देखा कि आकाश में ऊपर से सितारे धरती पर आ रहे हैं और नीचे आकर वे देवी-देवता का स्वरूप धारण कर रहे हैं। बहुत ही सुन्दर मनोहारी दृश्य था वह। पहले वाला दृश्य जितना भयानक था, दूसरा दृश्य उतना ही मनमोहक था। उस दृश्य का वर्णन करते समय ब्रह्मा बाबा जैसे खो-से गये। उस समय उनके चेहरे पर अद्भुत चमक थी। मैं और ऊषा मंत्रमुग्ध से देखते ही रहे और उसी दृश्य के भाव में बह गये।

जब ब्रह्मा बाबा ने आकाशवाणी सुनी कि बच्चे, इस विश्व परिवर्तन के कार्य के लिए आपको ज़िम्मेवार बनना है तो बाबा ने दोनों हाथ ऊँचे कर कहा कि नहीं, नहीं, मैं यह ज़िम्मेवारी उठाने के लिए तैयार नहीं हूँ, मेरे से यह नहीं हो सकेगा परन्तु ड्रामा की भावी थी कि ब्रह्मा बाबा यज्ञ की स्थापना के लिए निमित्त बने। विश्व परिवर्तन के लिए जो तीन प्रमुख साधन निमित्त बनेंगे, उन्हें भी बाबा ने कल्पवृक्ष के चित्र में दिखाया है – (1) प्राकृतिक आपदायें (2) गृह-युद्ध और (3) अंतर्राष्ट्रीय अणु युद्ध।

वर्तमान समय मैक्सिको के मायन कैलेण्डर के आधार पर जो भविष्यवाणी हुई, उसकी चर्चा सब जगह हो रही है। कई लोग हमें पूछते भी हैं कि आपके विश्व विद्यालय का इस भविष्यवाणी के बारे में क्या विचार है क्योंकि दुनिया में कई लोगों को शिवबाबा का यह संदेश मिल गया है कि विश्व परिवर्तन होना ही है। अनेक भविष्यवक्ताओं ने भी समय प्रति समय इस संबंध में भविष्यवाणियाँ की हैं। हिन्दू धर्म में तो कल्कि अवतार विनाश के लिए गाया हुआ है।

मायन कैलेण्डर के आधार पर जो भी भविष्यवाणी हुई है, उस पर फिल्म भी बनी है और उसके बारे में टीवी में समय प्रति समय चर्चा भी होती रहती है। ऐसी ही एक चर्चा में एक धर्मनेता और एक वैज्ञानिक को बुलाया गया था। दोनों से प्रश्न पूछा गया कि 21 दिसंबर 2012 को विनाश होगा तो 22 दिसंबर को क्या होगा? वैज्ञानिक ने जवाब दिया कि विज्ञान के पास विनाश और उसके बाद की दुनिया के बारे में कोई उत्तर नहीं है। धर्मनेता ने बहुत सहज रीति से उत्तर दिया कि 22 दिसंबर 2012 के बाद सतयुग आयेगा क्योंकि भारतीय संस्कृति के मुताबिक सृष्टि चक्र अनादि-अविनाशी है। अपने कथन के प्रमाण में उन्होंने आठ-दस शास्त्रों को भी उद्धृत किया।

जब से मैंने मायन लोगों की यह भविष्यवाणी सुनी तब से एक संकल्प मेरे मन में आ रहा है। आज से 10-12 साल पहले मैं मैक्सिको गया था। मैक्सिकन लोगों की संस्कृति ही मायन नाम से प्रसिद्ध है। मैंने एक सार्वजनिक कार्यक्रम में एक बात कही कि भारत में महामारी महाभारत युद्ध हुआ था और उसके लिए आपके मायन लोग ही मुख्य रूप में ज़िम्मेवार थे, तब सबने हमको पूछा

कि यह आप कैसे कह रहे हैं? मैंने उनको बताया कि महाभारत में ऐसा वर्णन आता है कि एक बार द्रौपदी और युधिष्ठिर अपने महल में एकांत में बैठे थे और उसी समय लुटेरों ने आक्रमण किया। अर्जुन को अपना गांडीव लेने की ज़रूरत पड़ी, नियम को भंग करते हुए वे युधिष्ठिर के कक्ष में घुस गये और गांडीव ले लुटेरों को भगा दिया। परंतु इस प्रकार से युधिष्ठिर के कक्ष में जाने के कारण उनको सज़ा के रूप में 12 वर्ष के लिए विश्व भ्रमण के लिए जाना पड़ा। इस दौरान पूर्वी भारत में ईरावती के साथ शादी की और उन्हें ब्रह्मवाहन नाम से बच्चा भी पैदा हुआ। ऐसे ही आगे बढ़ते-बढ़ते वे मैक्सिको पहुँचे, वहाँ की राजकन्या से शादी की और एक बच्चा पैदा हुआ। फिर आगे भ्रमण करते-करते द्वारिका पहुँच कर सुभद्रा का हरण कर उसके साथ शादी की और अभिमन्यु का जन्म हुआ। इस प्रकार 12 साल भ्रमण के बाद अर्जुन हस्तिनापुर आये और कौरव साम्राज्य का विभाजन हुआ। हस्तिनापुर दुर्योधन को मिला और खांडव वन पांडवों को मिला। खांडव वन को श्रीकृष्ण तथा अर्जुन आदि साथियों ने मिलकर जलाया और इंद्रप्रस्थ शहर बनाया गया। मायन वंश के लोग काफी निकट के संपर्क में थे, वे भवन निर्माण के कारोबार में काफी निपुण थे। उन्होंने इंद्रप्रस्थ में ऐसा महल बनाया जिसमें जगह-जगह भ्रमजाल होता था। भूमि, जल जैसी दिखाई देती थी और जल, भूमि जैसा दिखाई देता था। पांडवों ने महल के उद्घाटन के लिए कौरवों को बुलाया। दुर्योधन अपने भाइयों सहित इंद्रप्रस्थ गया और महल की स्थापत्य कला देख हैरान रह गया। वह भी भ्रम जाल में आ गया और ज़मीन को जलस्त्रोत समझ कपड़े ऊपर कर चलने लगा। फिर जब जल आया तो उसे जमीन समझ पानी में गिर गया। उसे गिरते देख द्रौपदी के मुख से निकला, 'अंधे की औलाद अंधा।' ये शब्द तीर की तरह दुर्योधन को चुभे। इस कारण उसके मन में वैर-भावना पैदा हो गई। बाद में जुए में पांडव सब कुछ हार गये और उन्हें 12 साल का वनवास और 1 वर्ष का अज्ञातवास भुगतना पड़ा। अंत में इस वैर का परिणाम महाभारी महाविनाश के रूप में निकला। मायन शिल्पकार ने ऐसी भ्रांति वाला महल नहीं बनाया होता तो द्रौपदी के मुख से कड़वे शब्द नहीं निकलते और परिणामरूप महाभारी महाभारत युद्ध नहीं होता। मैंने जब यह कहानी सारी सभा को सुनाई तो दूसरे दिन ही मैक्सिको के सभी अखबारों में आया कि एक हिन्दू गुरु ने आकर मायन लोगों का महाभारी महाभारत युद्ध में क्या पार्ट है, उसे भारत के शास्त्रों के आधार पर बताया है। फिर मैं जहाँ-जहाँ मैक्सिको में गया, सबने इस बारे में बहुत ही प्रश्न पूछे।

शिवबाबा ने भी कई बार कहा है कि शास्त्रों में कई बातों में आटे में नमक समान सच्चाई है। उन बातों को हम नहीं जानते थे परंतु शिवबाबा ने स्पष्ट किया है जैसेकि गीता में परमधाम शब्द है और परमात्मा के अवतरण के बारे में वर्णन है।

इस सीज़न में भी बाबा ने समय की चेतावनी की अनेक बातें कही हैं जो एक किताब के रूप में हमारे साहित्य विभाग द्वारा छपी हैं। परंतु हमारे बहन-भाई शिवबाबा द्वारा मिली सावधानी से इतने जागरूक नहीं हैं जितना मायन वंश द्वारा बताई गई भविष्यवाणी के बारे में चिन्तित हैं और हमें मायन वंश द्वारा बताई गई तारीख के बारे में सवाल पूछते रहते हैं। इन सभी प्रश्नों के उत्तर देते हुए शिवबाबा ने अव्यक्त मुरली में बताया है कि जो भी होना है, सब अचानक होना है। फिर भी अव्यक्त बापदादा हम बच्चों को डेट फिक्स करने के लिए कहते हैं। शिवबाबा ने तो यहाँ तक कहा है कि एडवांस पार्टी वाले और प्रकृति के पाँच तत्व भी अधीर होकर पूछ रहे हैं कि हम कब तक इंतजार करें। इसलिए शिवबाबा के मुरली के उत्तर को ही हम मानकर चलें तो अच्छी बात है।

मैं फिर भी सबको एक बात का उत्तर देता हूँ कि दुनिया का विनाश

कभी भी हो, उस बारे में हम क्यों चिन्ता करें। हम अपनी चिन्ता करें कि हमारी अंतिम यात्रा कब होगी। हमें कभी भी इस शरीर रूपी मंदिर को छोड़ना पड़े, इसके लिए हमारी क्या तैयारी है? शिवबाबा ने पहले भी यह सवाल पूछा है कि आप बच्चे कहाँ तक एवररेडी हैं? एक बार जब हमारी आदरणीया मोहिनी बहन अव्यक्त बापदादा के पास भोग लेकर गई थी तब बाबा ने पूछा कि मेरे बच्चे कहाँ तक एवररेडी हैं। मोहिनी बहन ने उत्तर दिया कि मैं अपने बारे में तो कह सकती हूँ कि मैं एवररेडी हूँ पर दैवी परिवार के बारे में दादी प्रकाशमणि ही बता सकेंगी। फिर बाबा ने दादी जी को सूक्ष्मवतन में इमर्ज किया और उनसे यही प्रश्न पूछा तो दादी जी ने बहुत ही सुन्दर रीति से युक्तियुक्त जवाब दिया कि बाबा, आपके सभी बच्चे नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार यथाशक्ति तैयार अर्थात् एवररेडी ही हैं।

दादी जी बहुत ही अच्छी वकील थी जो बाबा के सामने हमारी लाज रख ली। हम सब नंबरवार पुरुषार्थ अनुसार आने वाले भविष्य के लिए तैयार हैं। इसलिए जब भी कोई हमें मायन वंश की भविष्यवाणी के बारे में सवाल पूछे तो हम उन्हें बाबा का ज्ञान दे सकते हैं और कह भी सकते हैं कि जो भी होगा, वो अचानक ही होगा और अवश्य ही शास्त्रों में जो आटे में नमक मिसल सच्चाई है, उस अनुसार मायन वंश का इस महाविनाश के साथ कोई न कोई संबंध अवश्य ही होगा। यह सीन हम साक्षी हो देखेंगे।

विश्व के भविष्य के बारे में चिन्ता करने की बजाय हम सब अपने-अपने निजी भविष्य की चिन्ता करें और अचानक की परीक्षा के लिए तैयार रहें, यही संदेश मायन वंश की भविष्यवाणी का हमारे लिए हो सकता है। ❖

## रक्षा-बन्धन..पृष्ठ 4 का शेष

### बहनें-रक्षा बंधन क्यों बाँधती हैं

अब प्रश्न उठता है कि यदि परमात्मा ही पाँचों प्रकार की रक्षा करते हैं तो बहनें, भाइयों को रक्षा-बंधन क्यों बाँधती हैं अथवा ब्राह्मण भी रक्षा- बंधन क्यों बाँधते हैं? इस बात को समझने के लिए, आपको यह जानना चाहिए कि इस पर्व को 'विष तोड़क पर्व' अथवा 'पुण्यप्रदायक पर्व' भी कहा जाता है। इन नामों से सिद्ध है कि यह बंधन विषय-विकारों को छोड़ने और पुण्यात्मा बनने के लिए है। अत: 'रक्षा-बंधन' पवित्रता अथवा धर्म की रक्षा करने का बंधन है।

आप जानते हैं कि बहन और भाई का संबंध बहुत पवित्र होता है। अत: बहनों का भाइयों को बंधन बाँधने का अर्थ भी यही होता है कि भाई यह व्रत लें कि वे पवित्रता को धारण करेंगे तथा अपनी दृष्टि, वृत्ति और कृति को पवित्र बनायेंगे अथवा मन, वचन और कर्म से पवित्र रहकर सभी नारियों से अपनी बहन के समान बर्ताव करेंगे। ब्राह्मणों के द्वारा रक्षा बंधन बँधवाने का अर्थ भी यही है। प्राचीन काल में सच्चे ब्राह्मण पवित्र रहकर दूसरों को पवित्र रहने की प्रेरणा (शिक्षा) देते थे। अत: इस दिन वे बंधन बाँधते हैं ताकि प्रत्येक मनुष्य पवित्रता का व्रत ले। परन्तु आज न तो बहनें ही इस मनसा से 'रक्षा-बंधन' को बाँधती हैं और न ब्राह्मण ही। आज मनुष्य इस आध्यात्मिक रहस्य को भूल गया है और वह इस महान पर्व को एक रीति-रिवाज की तरह ही मानता है। इसलिए, आज यह पर्व 'विष तोड़क' अथवा 'पुण्यप्रदायक' पर्व के रूप में नहीं रहा और व्यक्ति अथवा समाज को इससे वह प्राप्ति नहीं होती जो इसे यथार्थ रूप में मनाने से हो सकती है। ❖

# प्रश्न हमारे, उत्तर आपके

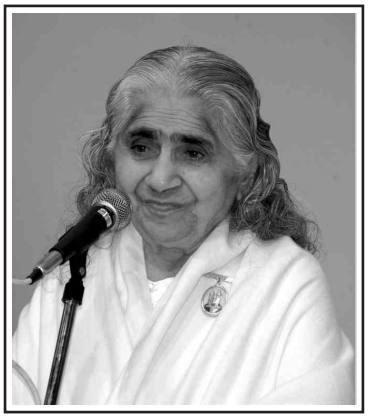

दिव्यबुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर ... – सम्पादक

**प्रश्नः- कैसे पता पड़े कि हमने अव्यक्त स्थिति को प्राप्त किया है?**

**उत्तरः-** अव्यक्त स्थिति बनाने के लिए महसूसता आयेगी कि मेरी स्थिति बन रही है। जैसी बननी चाहिए, वैसी बनी कि बनी। अभ्यास जारी रखें, जैसी स्थिति बनानी है, उसे नज़रों के सामने रखें। आत्मअभिमानी स्थिति का पूरा अनुभव करना है जिससे देहभान से दूर रहूँ। इसकी गहराई में जाना है। बाबा साकार में होते भी सदा अव्यक्त दिखाई पड़ते थे।

श्रीमत का पालन करने में अगर मुझे थोड़ा भी भय हो या हिम्मत न हो तो अव्यक्त स्थिति में नहीं रह पायेंगे। अपने आप को परमत, मनमत के प्रभाव से फ्री करें। श्रीमत का पालन करने में हमें ज़रा भी संकोच न हो, हिम्मत हो। अव्यक्त स्थिति बनाने में बाबा की मदद तब काम करती है जब हम श्रीमत पर हैं। दीदी को श्रीमत की टॉप वैल्यू थी। कभी किसी परमत के प्रभाव में नहीं आई। जो बाबा ने कहा, सो करना है। अंदर का आवाज़ यही हो जो बाबा ने कहा, वह करना है और वही होगा। सत्य परमात्मा ने जो कहा, उसको पालन करने की शक्ति हमारी स्थिति को अव्यक्त बनाती है। स्वयं के पुरुषार्थ में सफलता, सेवा में सफलता, ईश्वरीय परिवार की दुआयें और स्नेह भी स्थिति बनाने में मदद करते हैं। ईश्वरीय परिवार से स्नेह और दुआयें लेने के लिए मैं गुप्त पुरुषार्थ करूँ। सर्व द्वारा स्नेह और दुआयें प्राप्त करने की मैं आत्मा पात्र रहूँ। बाप बच्चों को कहते हैं, मरजीवा बनो, जीते-जी मर जाओ। इसमें अपने आप को चेंज करने में मुश्किल महसूस ना हो, कैसे करूँ, यह प्रश्न ना हो। नम्रता, सत्यता, पवित्रता – ये तीनों गुण अव्यक्त स्थिति का अनुभव करायेंगे। नम्रता के गुण से हम व्यक्त भाव से दूर हो सकते हैं, नहीं तो देह-अभिमान नम्रता को यूज़ करने नहीं देता। नम्रता देही-अभिमानी बना देती है। जैसे पहले हम सोचते थे, वो सोचने का तरीका नम्रता बदल देती है। नम्रता भी पवित्रता की शक्ति से आती है। अंदर से नम्रता, पवित्रता, सत्यता की रिहर्सल करके देखी है, आप भी करके देखो। ज्यादा मेहनत वाला पुरुषार्थ छोड़कर अगर इन तीन बातों पर भी पुरुषार्थ करते हैं तो भी अव्यक्त स्थिति बना सकते हैं। अव्यक्त स्थिति बनाने की जब तीव्र इच्छा होगी तो मोटे पुरुषार्थ से फ्री होते जायेंगे और सूक्ष्म पुरुषार्थ से अव्यक्त स्थिति बनाते जायेंगे। परमात्मा बाप की लगन में, उसके साथ सर्वसंबंध से हमारी स्थिति बनती जायेगी। समय सफलता ले आयेगा, नहीं, सफलता ही समय को ले आयेगी। मम्मा-बाबा ने समय का इंतज़ार नहीं किया। मम्मा ने इतना पुरुषार्थ किया जो अपनी स्थिति जमा ली, हमें नहीं पता था कि मम्मा,

बाबा से पहले चली जायेगी। हमें लगता था कि मम्मा, बाबा के बाद भी रहेगी। मम्मा को कभी देह-अभिमान में या छोटी-मोटी बातों में नहीं देखा। ज्ञान की वीणा बजाते देखा, धारणा की मूरत देखा। मम्मा ने कभी सीधा यह नहीं बोला कि यह नहीं करो लेकिन मम्मा को देखकर पता चल जाता था कि यह नहीं करना चाहिए। बाबा ने वरदान दिया है, जो संकल्प करोगे, साकार होगा। अगर अव्यक्त स्थिति बनाने का संकल्प है तो वह साकार ज़रूर होगा। बाबा आयु, समय नहीं देखता। आज ज्ञान में चला हुआ भी जम्प लगाकर आगे जा सकता है।

**प्रश्नः- शरीर बीमार हो तो भी बीमारी की चिन्ता से मुक्त कैसे रह सकते हैं?**

**उत्तरः-** बीमारी के प्रति मन की प्रतिक्रिया उतनी ही भयानक हो सकती है जितनी कि स्वयं बीमारी, इसलिए मन से ऐसे संकल्प करने हैं जो स्वस्थ होने में मददगार बनें, न कि स्वस्थ होने की प्रक्रिया में बाधक बनें। मैंने कई वर्षों तक नर्स के रूप में भी सेवा की है और मरीज़ होने की अनुभवी भी हूँ। मैंने अच्छी तरह परखा है कि शरीर को ठीक करने में जितना साइन्स का महत्त्व है उतना ही साइलेन्स का भी है।

शरीर के साथ जो कुछ भी हो रहा है, उससे न्यारा होने में हम अपने मन की शक्ति का प्रयोग कर सकते हैं। साक्षीद्रष्टा बनकर शरीर को देखने से हम लगाव से मुक्त हो जाते हैं। नकारात्मक भावनाओं और विचारों से मुक्त होकर, खुशी, शान्ति और कल्याण के भाव तथा विचार उत्पन्न करने से हम बीमारी में भी अपेक्षाकृत सुखदायी स्थिति का अनुभव कर सकते हैं।

दिल में जो कुछ है, उसका दमन करने से स्वस्थ होने की प्रक्रिया में बाधा पड़ती है। अतः प्रेम तथा ईमानदारी से अपने दिल की बात सुनो। ईमानदारी के आचरण से, परिस्थितियों का सामना करने की आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है। लेकिन ध्यान रहे, परिस्थितियों को देख दुखी नहीं होना, नहीं तो आत्मा कमज़ोर हो जायेगी। यदि हम अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी पवित्र और सकारात्मक विचार पैदा करें तो शक्तियों की प्राप्ति होती है, मन शक्तिशाली बनता है और शरीर को ठीक करने में मदद मिलती है।

**प्रश्नः- सुस्ती को कैसे जीतें?**

**उत्तरः-** सुस्ती झूठ सिखाती है, बहाना बनाना सिखाती है, चोरी करना सिखाती है। सुस्ती सच को जानने की शक्ति छीन लेती है। कभी बैठकर सोचिये कि सुस्ती से कितना नुकसान होता है। सुस्ती बीमारी को ले आती है इसलिए ना तन से, ना मन से, ना धन से सुस्त होना है। कोई धन खर्च करने में भी सुस्ती करता कि आज नहीं कल कर लेंगे। सेवा में भी सुस्ती आती। भाग्य बनाने की घड़ी खड़ी है, अभी नहीं बनायेंगे तो कब बनायेंगे! सुस्ती कभी क्लास में रेग्यूलर पंक्चुअल बनने नहीं देगी। भले कम बुद्धि वाला हो पर रेग्यूलर पंक्चुअल हो तो पास हो जायेगा। उसे मदद मिल जायेगी। कई ऐसे हैं जिनको कहो, क्लास कराने आओ तो आयेंगे पर क्लास करने के नाम पर उन्हें सुस्ती आती है। क्लास के समय कोई कहता है, मुझे काम है तो यह भी सुस्ती है। किसी भी ड्यूटी से बड़ी ड्यूटी है क्लास में हाजिर होने की। बाबा परमधाम से आता है हमको पढ़ाने। बाबा कमरे से तैयार होकर क्लास में एक मिनट भी लेट नहीं आते थे। जो टीचर के बाद आता है, वह स्टूडेन्ट नहीं है। उसे टीचर के प्रति रिगार्ड नहीं। आज दिन तक हमको लेट आने में टाँगें हिलती हैं, मुझे लगता है, मैं भूल कर रही हूँ। चाहे एक भी स्टूडेन्ट क्लास में न हो पर मैं पहले जाऊँ – ऐसा सोचने वाला है बाबा का ऑनेस्ट स्टूडेन्ट।

❖

# 'पत्र' संपादक के नाम

'ज्ञानामृत' पत्रिका वास्तव में ज्ञान रूपी अमृत का सागर है जिसमें जितने गोते लगाओ, उतनी ही अधिक पिपासा बढ़ती जाती है। अप्रैल, 2010 के अंक में 'अपमान – महान बनने का साधन' पढ़ा तथा पढ़कर ऐसा प्रतीत हुआ कि मानव जीवन की सार्थकता ही अपमान है, बशर्तेकि मानव सकारात्मक सोच रखते हुए अपने अपमान को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करे जैसा कि भक्त ध्रुव, महात्मा गांधी व डॉ. अंबेडकर ने स्वीकारा। उक्त विषय पर प्रस्तुत विचार मानव, समाज व राष्ट्र के लिए कल्याणकारी हैं। इसी माह के अंक में 'स्वर्ग का द्वार है नारी' भी पढ़ा जो वास्तव में यथार्थता से परिपूर्ण है। नारी वास्तव में एक गड्ढा है जो अपने में सबको समा लेती है, यह संस्कार उसे प्रकृति प्रदत्त है। नर सोचता है कैसे इस नारी को जीतूँ जबकि नारी सोचती है कैसे इस पुरुष से हारूँ। लाओत्से के अनुसार, हारने की कला ही जीतने की कला है। नारी भाव भी यही है, इसलिए नारी महान है। अत: लेखिका द्वारा नारी के संबंध में दी गई ज्ञान रूपी जानकारी के लिए मैं उनका वंदन करता हूँ। संपादक महोदय का भी आभार! पाठकों से निवेदन है कि पत्रिका में प्रकाशित विचारों को पढ़ें तथा आत्मसात् भी करें।

**– रमेश चन्द्र वर्मा,**
**फिरोजाबाद**

---

मैं ज्ञानामृत की नियमित पाठिका हूँ। 'प्रश्न हमारे, उत्तर आपके' स्तंभ में आदरणीया दादी जानकी जी द्वारा जिज्ञासुओं के प्रश्नों के सरल उत्तर पढ़कर हमको शान्ति मिलती है क्योंकि जो प्रश्न पाठकों द्वारा पूछे जाते हैं, उनमें बहुत सारे लोगों की जीवन संबंधी समस्यायें होती हैं। 'स्वर्ग का द्वार है नारी' आलेख नारियों के आत्म-सम्मान को बढ़ाने में सहायक होगा।

**– अनीता जैन, जबलपुर**

---

अप्रैल अंक में 'ऐसे मिली जीवन को नई दिशा' पढ़ा। रूपांतरण के आत्म अनुभव को पढ़कर अच्छा लगा। अप्रैल एवं मई के अंकों में डिप्रेशन विषय पर प्रश्नोत्तर शैली में दी गई जानकारी अत्यंत उपयोगी लगी। विषय के सारगर्भित प्रस्तुतीकरण से पाठकों को सेल्फ काउंसलिंग एवं विषय को समझने में निश्चित ही मदद मिलेगी।

**– संतोष, जबलपुर**

---

प्रतिष्ठित, सुपरिचित पत्रिका 'ज्ञानामृत' देखने, पढ़ने का सौभाग्य 'सुसाहित्य पुस्तकालय' में हुआ। प्रत्येक अंक बेहतर से बेहतरीन है। प्रत्येक अंक रुचिकर, ज्ञानवर्धक व पठनीय है। इस सुप्रयास के लिए संपादक मंडल बधाई व साधुवाद का पात्र है।

**– सुनंदा संतोष गुप्ता,**
**अमरावती**

---

मई 2010 के 'ज्ञानामृत' के सभी लेख मन को छू लेने वाले हैं किंतु संपादकीय लेख 'कर्मगति' मेरे अंतर्मन के चक्षुओं को खोलने में सहायक रहा। 'गहना कर्मणो गति:' अर्थात् कर्मों की गति गहन है। किस कर्म का कब फल निकलेगा, इसका स्पष्ट गणित जनसाधारण के मन में नहीं होता जिस कारण अनेक प्रकार के प्रश्नों से मन भ्रमित होता रहता है। लेख में सुन्दर रीति लिखा गया है – 'यदि हमारे खेत में से आलू निकल रहे हैं तो निश्चित रूप से हमने कभी आलू बोए थे जरूर। हो सकता है हमें याद न हो, हम डालकर भूल गए तो भी बीज तो अपनी क्रिया करता रहेगा और एक दिन फल अवश्य देगा। फल पकने पर ही पेड़ से गिरता है एवं खाने लायक भी तभी बनता है अर्थात् समय आने पर ही कर्म रूपी फल हमारी झोली में आता है।' इन ज्ञानवर्धक पंक्तियों ने मेरे चित्त को झँझोड़ कर मेरे कई सवालों के जवाब स्वत: ही दे दिये।

**– रोजी रतड़ा, फरीदाबाद**

# मैं कहता हूँ आँखों देखी

• ध्यान गुरु रघुबीर जी महाराज, कोटली, सिरसा

परमपिता परमात्मा के मधुर आशीष से कुछ दिन पूर्व मुझे ब्रह्माकुमारीज़ की स्थानीय शाखा शांति सरोवर में जाने का सुअवसर प्राप्त हुआ। कुछ जटिल समस्याओं एवं परिस्थितियों के कारण तबीयत कुछ खराब चल रही थी लेकिन ब्रह्माकुमारी बहनों के पवित्र सानिध्य और आश्रम के शक्तिशाली वातावरण में रमण करते हुए मैं दिन-प्रतिदिन स्वस्थ होता गया। व्यक्तिगत अनुभव कहता है कि जीवन में अच्छे समय की पहचान सन्तों, भक्तों एवं योगियों के संग में आने से ही होती है। तुच्छ लोगों का संग इंसान को जैसे उसके बुरे वक्त की अनुभूति कराता है। महान दार्शनिक एवं राजनीतिज्ञ चाणक्य लिखते हैं कि कुत्ते से 8 कदम, सींग वाले पशु से 10 कदम और खराब आचरण वाले व्यक्ति से हमेशा 60 कदम दूरी पर रहना चाहिए।

### मेरे जीवन का अच्छा समय आया

मेरे जीवन का भी अति सुखद समय आया जब मैं निमित्त शिक्षिका की प्रेरणा से संस्था के मुख्यालय माउंट आबू पहुँचा। पवित्रता और सात्विकता से परिपूर्ण इस महान तीर्थ पर ब्रह्मा भोजन ग्रहण करने के बाद मेरे मानस पटल पर शास्त्रों में लिखी यह बात प्रकाशित हो उठी –

''आहार शुद्धे सत्व शुद्धे,
सत्व शुद्धो, ध्रुवा स्मृति।''

### सादा जीवन और उच्च विचार की प्रतिमूर्ति हैं दादी जी

ज्ञान सरोवर में चलने वाले संत सम्मेलन के स्वागत सत्र में संस्था की मुख्य प्रशासिका आदरणीया दादी जानकी जी के पावन दर्शन हुए। परम तपस्विनी, त्याग की चेतन मूर्त, श्वेत वस्त्रों में पवित्रता की तरंगें प्रवाहित कर रही दादी जी को देखकर ऐसा अनुभव हो रहा था कि ये कोई साधारण व्यक्तित्व नहीं बल्कि सादा जीवन उच्च विचार की एक सर्वोच्च मिसाल हैं। उनकी कार्यशैली से विनम्रता साफ झलक रही थी। प्रेम और शुद्धता की ये चेतन मूर्त छोटे-बड़े सबको खुशी, स्नेह और शक्तियाँ बाँट रही थीं। समस्त मानव मात्र को, ईश्वरीय गुणों से संपन्न ऐसी महान देवियों के दर्शन करके अपने जीवन को सफल अवश्य करना चाहिए। हमारे शास्त्र भी कहते हैं, 'जैसा संग वैसा रंग' और 'सन्त मिलन सुख जग नाहि'। ऐसे सन्तों के पावन दर्शन करने से एक

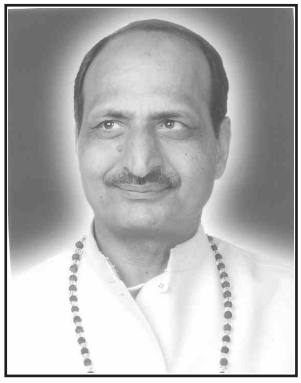

विशेष खुशी का अनुभव होता है।

### यहाँ की हर बात में चुंबकीय आकर्षण है

अगले दिन प्रातः 3.30 बजे शुद्धता की तरंगें प्रवाहित करता हुआ एक मधुर गीत 'अमृतवेला शुद्ध पवन है मेरे लाडलो जागो ..' कानों में गूँजा। हृदय को छू जाने वाला यह गीत मन की गहराइयों में यूँ उतर गया कि मैं ईश्वरीय गोद का लाडला बच्चा बनकर आनन्दित होने लगा। मैंने देखा, इस गीत के बजते ही प्रभु-प्रेम के दीवाने, परमात्म अनुभूतियाँ करने के लिए बाबा के कमरे अथवा क्लासरूम की ओर बड़ी उत्सुकता से चले जा रहे थे। गोपी वल्लभ से गोप-गोपियों के अलौकिक मिलन की तड़प का एहसास कराता यह दृश्य बड़ा अतीन्द्रिय सुख दे रहा था। वातावरण में असीम शान्ति और

दिव्यता, धरा पर स्वर्ग लोक का अनुभव करा रही थी।

**राजयोग ही वास्तविक कर्मयोग है**

तत्पश्चात् 6.30 बजे राजयोग की क्लास सुनते हुए पाया कि यह राजयोग ही वास्तविक कर्मयोग है। शरीर को ही 'मैं' समझ लेना सबसे बड़ी भूल है और सब पापों की नींव है। जब हम आत्म-स्मृति में रहकर शरीर से कर्म करवा रहे होते हैं तो साधारण कर्म भी दूसरों को संतुष्टता की अनुभूति करवाता है और व्यवहार और परमार्थ का संतुलन हो जाता है। अजर, अमर, अविनाशी आत्मा का तथा हम सबके अति प्यारे परमपिता शिव परमात्मा का संपूर्ण परिचय पाकर मैं देह से भिन्न एक अलौकिक सत्ता के रूप में अपने सच्चे पिता से अद्भुत मिलन का अनुभव कर रहा था। **क्लास पूरी होने के बाद मैंने अनुभव किया कि समस्त संसार में यह माउंट आबू ही परम तीर्थ है जहाँ सच्ची पवित्रता एवं आनन्द का अनुभव किया जा सकता है।** मैं पाठकों से यही अनुरोध करता हूँ कि अपने जीवन में आई मानसिक व्याधियों तथा आध्यात्मिक कमियों को पूर्ण करने के लिए इस महान तीर्थ में बह रहे अलौकिक झरने में आत्मा को स्नान अवश्य करवाएँ। यहाँ दिये जा रहे ज्ञान-स्नान से ही मन तथा शरीर की हर व्याधि को दूर करके संपूर्ण स्वस्थ जीवन का आनन्द लिया जा सकता है।

कभी न भूलने वाली इस तीर्थ यात्रा का अनुभव यूँ तो शब्दों में बयान कर पाना अति कठिन है लेकिन जब मैं स्वयं में खोकर माउंट आबू के उन आकर्षक दृश्यों को मन की आँख से निहारता हूँ तो यह गीत स्वत: ही मेरे कानों में गुंजारित होने लगता है –

**तेरा वो प्यार है बाबा जो बतलाया नहीं जाता,**
**छलक जाता है नयनों से वो समझाया नहीं जाता।**

❖

# वाह ड्रामा वाह

**ब्रह्माकुमार अवनीश, दुबई**

जो कुछ भी है बीत चुका और जो भी बीत रहा है
पुन: वही फिर बीतेगा, शिव ने स्वयं कहा है।
बाबा ने हम बच्चों को कर दिया है आगाह
**इसलिए मिलकर बोलो, वाह ड्रामा वाह।।**

नया नहीं कुछ भी होता, सब कुछ बना बनाया है
कल्प-कल्प हमने केवल शिवबाबा को पाया है।
हम बच्चों की पहले से ही बनी हुई है राह
**इसीलिए मिलकर .....**

फिकर नहीं करना कुछ भी फखर स्वयं पे करना
खुदा जिसे खुद मिल जाए फिर उसको है क्या डरना।
बाबा ने पूरी कर दी जीवन की हर चाह
**इसीलिए मिलकर .....**

सब निश्चित है केवल तुमको करना है विश्वास
दुनिया में एक तिनका भी है अपनी जगह पर खास।
हम बच्चों ने लगा ली है इस दुनिया की थाह
**इसीलिए मिलकर .....**

जो होगा अच्छा होगा, तुम सारी चिन्ता छोड़ दो
केवल अपनी वृत्ति को शिवबाबा में मोड़ दो।
अब खत्म जल्द ही होना है सबका दर्द कराह
**इसीलिए मिलकर .....**

**प्रकाशन सामग्री से संबंधित सूचना**

ज्ञानामृत कार्यालय में भेजी जाने वाली प्रकाशन सामग्री (लेख, कविता, गीत, अनुभव, संस्मरण, पत्र आदि) अथवा अन्य प्रकार के पत्र-व्यवहार में कृपया अपना पूरा पता, सेवाकेन्द्र का नाम, फोन नं. अथवा मोबाइल नं. अवश्य लिखें।

# प्यार की देवी – दादी जी

• ब्रह्माकुमारी सरोज, कासगंज

दादी जी से मेरी पहली मुलाकात दिनांक 31 दिसंबर, 1960 को हुई, जब मेरी आयु मात्र 7 वर्ष की थी। इस अविनाशी रुद्र गीता ज्ञान यज्ञ की प्रथम संचालिका ज्ञानवीणावादिनी मातेश्वरी जगदम्बा सरस्वती जी, दादी जी और बड़ी दीदी जी सहित 35 भाई-बहनों का एक ग्रुप मेरे लौकिक गाँव सीमद (करीमाबाद, उत्तर प्रदेश) में आया था। वहाँ प्रथम मिलन हुआ इस करुणा की देवी के साथ।

**श्वेत वस्त्र ही पसंद थे**

सन् 1969 में, मैं बाबा से मिलने के लिए अपने माता-पिता से छुट्टी लेकर मधुबन में आई। इसी अवसर पर दादी जी ने मुझे अपने साथ रख लिया। बहुत स्नेह से बाबा, दादी और दीदी मनमोहिनी के लिए भोग बनाने की सेवा का सुअवसर मुझ आत्मा को प्राप्त हुआ। आदरणीया दादी जी को श्वेत वस्त्रों में ही रहना और सबको रखना पसंद था। रसोईघर में श्वेत वस्त्र सब्जी आदि से गंदे होते थे अत: एक बार संतरी दादी ने दादी जी से पूछा कि इसके कपड़े रसोई में जल्दी गंदे हो जाते हैं, इसे रंगीन गाउन दे दूँ। इस पर दादी जी ने कहा कि भले ही दिन में तीन बार ड्रेस बदलनी पड़े लेकिन रंगीन गाउन नहीं। ईश्वरीय क्लास में भी कोई भी रंगीन ड्रेस पहना हुआ उन्हें अच्छा नहीं लगता था। कहती थीं, यह फरिश्तों की सभा है और फरिश्ते धवल हुआ करते हैं, रंगीन नहीं। उनसे जब किसी ने पूछा कि आप कौन-सी देवी हो तो उन्होंने कहा था कि मैं वैष्णो देवी हूँ। सचमुच आप संपूर्ण वैष्णव थी।

**सर्वांगीण विकास की ओर ध्यान**

प्रशासन के समस्त गुण दादी जी को शिवबाबा ने प्रदान कर दिये थे। वे चक्कर लगाकर हर विभाग को ज़रूर देखना पसंद करती थी। यहाँ तक कि रात में पहरे पर तैनात भाइयों के पास भी जाकर उनके हाल-चाल पूछ लेती थीं। जहाँ सेवा की आवश्यकता हो, वहाँ स्वयं हाज़िर हो जाती थीं। एक बार मैं रसोई में अकेली ही गोलगप्पे बना रही थी तो दादी जी रोज़ की तरह ही आई और मेरे साथ गोलगप्पे चकले से बेलने लगी। वे सर्वांगीण विकास की ओर ध्यान देती थी। मैं कहीं किसी कार्य में पीछे नहीं रहूँ इसलिए भोग बनाने की सेवा के साथ उन्होंने कहा कि तुम्हें दिन में दो घंटे का समय निकाल कर म्यूजियम (नक्की झील के पास) में जाकर लोगों को चित्रों पर समझाने की सेवा भी करनी है।

**स्नेह की प्रतिमूर्ति**

दादी जी, स्नेह की प्रतिमूर्ति थी। मैं इतना नजदीक रही परंतु याद नहीं कि मुझे कभी डाँटा हो। मेरा किसी समर्पण समारोह में समर्पण नहीं हुआ। सन् 1971 में मेरी लगन को देखते हुए अभिभावकों ने मेरा हाथ दादी जी के हाथ में दे दिया, यही था मेरा यज्ञ सेवा में समर्पण। उन दिनों सेवाकेन्द्र पर कोई फोन आदि की सुविधा नहीं थी, मेरी आँख में हेमरेज होने का पता जैसे ही दादी जी को लगा, उन्होंने तुरंत लखनऊ, इलाहाबाद, कासगंज आदि स्थानों पर फोन द्वारा क्लास के एक भाई का फोन नंबर पता करके मुझसे मेरा हाल-चाल लिया और तुरंत ही मधुबन पहुँचने के लिए कहा और अहमदाबाद में मेरी आँख का ऑप्रेशन कराया। लौकिक में अलौकिक की ही अनुभूति हो इसलिए मेरी लौकिक माँ के शरीर छोड़ने पर जब मैं घर गई तो उन्होंने मुझे टेपरिकार्डर देकर भेजा ताकि मैं ईश्वरीय गीत और मुरली सुन सकूँ।

**सुना और समाधान दिया**

जिस पर उन्हें विश्वास हो, उसके लिए कोई कुछ भी आरोप लगाए, उन्हें वे सिरे से नकार देती थी। मेरे साथ भी एक बार ऐसा ही हुआ। किसी ने इस प्रकार की कोई शिकायत उनसे मेरे बारे में की तो उन्होंने कहा था कि वह बचपन से मेरे साथ रही है, मैं जानती हूँ कि वह क्या है। उन्होंने नाराज किसी को नहीं किया। दोनों तरफ की बातें सुनना और समाधान देना, यह उनकी विशेषता थी।

साकार बाबा की कमी को कभी खलने नहीं दिया उस प्यार की देवी ने। दिल से यही निकलता है – 'इतना प्यार करेगा कौन, माँ करती थी जितना।' ❖

# जितना सुना, उससे अधिक पाया

मधुबन (माउंट आबू) आने वाले भाई-बहनों से यहाँ की महिमा, अनुभूति सुना करता था। मन में लालसा जगती थी कि मौका मिले तो ज़रूर जाऊँ, उस वातावरण में कुछ दिन जीऊँ, प्रत्यक्ष अनुभव पाऊँ। जैसे ही भिलाई सेवाकेन्द्र की दीदी का संदेश मिला, मन में सुख-संभावनाओं की शीतल फुहारें फूटीं। संचित अभिलाषा की पूर्ति का प्रस्फुटन भाव जागा, सहर्ष तैयार हो गया। कौन अभागा ऐसे मौके को गंवाना चाहेगा? मन प्रफुल्लित हो उठा। पत्नी भी उल्लसित थी। खुशी-खुशी दिन बीतते गये। जाने का दिन आया। कब ट्रेन में बैठे, कब आ गये, पता नहीं चला। भीषण गर्मी और भारी भीड़ में भी कोई असुविधा, तकलीफ नहीं हुई। मन में खुशी के बीज जो अंकुरित हो रहे थे।

आबू की धरती पर कदम पड़ते ही और यहाँ की सुविधा-व्यवस्था को देख कर तो सुखद आश्चर्य हुआ। जितना सुना था, उससे कहीं अधिक यहाँ देखने को मिला। सचमुच बाप का घर। अपनी इच्छानुसार खाओ, पिओ, आराम करो। किसी से पूछने की ज़रूरत नहीं। हाँ, मगर सभी कुछ समय पर, अनुशासित, मर्यादित, नियंत्रित; इतनी सुन्दर व्यवस्था तो कोई अलौकिक शक्ति ही कर सकती है। मनुष्य की व्यवस्था में कोई कमी या खामी हो सकती है। यहाँ तो बाबा के भंडारे में, घर में सभी कुछ भरपूर, सदा भरपूर।

शिविर के सारे व्याख्यान तो जीवनोपयोगी थे ही, योग के अभ्यास के दौरान जो अनुभूति हुई, अनोखी दुनिया में जाने का जो एहसास हुआ, वह वर्णनातीत है। अतीन्द्रिय सुख, शान्ति, आनन्द की प्राप्ति से मन पवित्र होने लगा। यह पहली अनुभूति थी। यहाँ आत्मा व परमात्मा का यथार्थ परिचय तथा परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्य का बोध हुआ –

**'पहले जानो मैं आत्मा हूँ,**
**अजर-अमर-अविनाशी**
**यह शरीर तो रथ है मेरा,**
**पंच तत्व का बना विनाशी'**
**दिव्य जन्म लेते परमात्मा,**
**दिव्य कर्त्तव्य हैं करते**
**दिव्य रूप अविनाशी चेतन,**
**परमधाम में रहते।'**

यहाँ जो सीखने को मिला – अमृतवेले उठना, मीठे बाबा को याद करना, उन्हीं की स्मृति में श्रेष्ठ कर्म व पुरुषार्थ करना, ज्ञान धारण करना, ज्ञान-दान देना, परमार्थ करना, बाबा का मीठा व प्यारा बच्चा बनना – इसका अनुकरण करने से जीवन धन्य तो होगा ही, अविनाशी कमाई जमा होती जायेगी क्योंकि

**'बाबा कहते, मीठे बच्चे,**
**बोलो प्रेम की बोली**
**याद करो तुम मुझे निरंतर,**
**जलाओ विकर्मों की होली'**

फिर, आबू दर्शन तो मानो उनकी ही रचना का एवं कर्त्तव्यों का ही दर्शन था। आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति हुई। यहाँ की प्राप्तियों, मधुर स्मृतियों, दादियों के स्नेह को संजोये एवं पुनः आने की उत्कट चाहत के साथ खुशी-खुशी विदा हुआ।

**– डॉ. नीलकंठ देवांगन,**
**कोड़िया (दुर्ग)**

# त्याग नहीं, भाग्य

• ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

सार्वजनिक सभाओं में, ज्ञान-चर्चा के दौरान कई बार, कई जिज्ञासु प्रवृत्ति के बहन-भाई कई प्रकार के प्रश्न पूछते हैं। प्रश्न पूछना अच्छा है, इससे मन के संशय दूर होते हैं और बुद्धि को नये विचार मिलते हैं। ऐसी ही एक सभा में एक जिज्ञासु भ्राता ने पूछा कि **ब्रह्माकुमारी संस्था में जाने या समर्पित होने से सब कुछ छोड़ देना पड़ता है क्या?**

यह प्रश्न केवल उन्हीं भाई का नहीं था, अन्य भी बहुतों के मन में यह बात कई बार आती है जब तक कि वे संस्था को बहुत समीप से नहीं जान जाते। वास्तव में देखा जाये तो छोड़ने और अपनाने के भी अपने-अपने अर्थ होते हैं। कई बार हम देखते हैं कि दो भाई या दो रिश्तेदार इकट्ठे रहते हैं परंतु दोनों के घरों के बीच दीवार खिंची हुई है। हम एक के घर जायें और उससे कहें, भाई, अपने दूसरे भाई को भी बुला लो, हम उससे भी यहीं मिल लेंगे तो उत्तर मिलता है, पिछले 15 वर्षों से हमारी बोल-चाल और आना-जाना बंद है, वो हमारे कहने से यहाँ नहीं आयेगा, आप दीवार के दूसरी ओर जाकर ही उनसे मिल लीजिए।

इसे आप क्या कहेंगे? छोड़ना या अपनाना? बाजू के घर में, अपने ही खून के रिश्तेदार के यहाँ कौन जन्मा, किसकी शादी है, कौन तकलीफ में है आदि सब बातों से हम बेखबर और बेपरवाह हैं। प्यार, स्नेह, सहयोग के लेन-देन की तो बात छोड़िए, गली-मोहल्ले में आमना-सामना हो जाए तो हम नज़रें चुराकर, कन्नी काटकर, पीठ मोड़कर निकल भागते हैं। वास्तव में छोड़ना तो इसे कहेंगे क्योंकि जिसके लिए दिल में जगह समाप्त हो जाए, उसे मानो हमने छोड़ दिया।

यह तो दो घरों की बात हमने की, कई बार तो एक ही छत के नीचे रहने वाले दो सगे भाई-बहन, पति-पत्नी, पिता-पुत्र, दादा-पौत्र आदि के बीच भी ऐसा अलगाव आ जाता है कि एक-दो से पराए और अनजान बनकर जीने लगते हैं। न केवल पराए और अनजान बनते हैं बल्कि दुर्भावनाओं को भी मन में पाल लेते हैं। ईर्ष्या, द्वेष, अनुमान, भय, शंका, बदले की भावना आदि से भरी नज़रों से एक-दो को घूरते हैं। यह भी क्या है? रहते इकट्ठे हैं पर मन से एक-दो को नहीं अपनाया हुआ है। मन दूर है, मन ने पारस्परिक स्नेह-सद्भावना को छोड़ दिया है तो मानो एक छत के नीचे रहते भी एक-दो को छोड़कर, त्यागकर बैठे हैं।

ब्रह्माकुमारियाँ किसी भी मित्र-संबंधी का यूँ मन से त्याग नहीं करती। चाहे नजदीकी संबंधी, चाहे दूर के, किसी से मिलने, बातचीत करने, किसी के घर जाने, समस्या का निवारण करने में कोई परहेज नहीं करतीं। उनका कोई भी जाना-पहचाना, पड़ोसी, सहपाठी कभी भी उनसे मिल सकता है। सबका भला चाहने वाली ये बहनें (अथवा भाई) किसी का भी मन से त्याग नहीं करते। यहाँ तक कि उनके रास्ते में रोड़ा डालने वाले, विरोध करने वाले, गाली देने या अपमान करने वाले को भी कभी भी, कहीं भी दिल से अपनाने को हरदम तैयार रहती हैं। ब्रह्माकुमारी बनकर, जो कुछ पहले प्राप्त था, उसका त्याग नहीं हो जाता बल्कि जो कुछ पहले था, उससे कई गुणा ज्यादा प्राप्त हो जाता है। मान लो, पहले लौकिक परिवार में एक भाई था, पर अब तो दुनिया के लाखों-करोड़ों भाइयों से भ्रातृ स्नेह का नाता जुट जाता है। पहले घर में एक या दो बुजुर्गों का आशीर्वाद मिलता था, अब तो संसार के कई बुजुर्गों से दुआ कमाने की विधि आ जाती है। भाव यह है कि छोड़ने के बजाय प्राप्तियाँ बढ़ जाती हैं। मानव-प्रेम का दायरा बढ़ जाता है,

परिणामस्वरूप सर्वप्राप्तियाँ अनुकूल हो जाती हैं। अत: इसे त्याग के स्थान पर भाग्य कहना ज्यादा उचित है।

जैसे कोई व्यक्ति सेना में भर्ती हो जाता है और सेना के नियम-प्रमाण वर्ष में केवल पंद्रह दिन ही अपने घर आता है तो इसका अर्थ यह नहीं है कि उसने परिवार को छोड़ दिया है। अपनी सेवा अर्थ दूर रहते भी वह परिवार के प्रति स्नेह, कल्याण की भावना से भरा रहता है। इसी प्रकार, विश्व सेवा के बेहद क्षेत्र में रहते इस संस्थान के भाई-बहनें भी, अपने परिवार और सारे विश्व के प्रति स्नेह और कल्याण भावना को लेकर ही सेवारत रहते हैं। यदि मन में स्नेह और सद्भावना है तो तन की दूरी को, दूरी नहीं कहा जा सकता। अब आप ही निष्कर्ष निकालिए, संसार का त्याग कौन करता है और संसार से सच्चा प्रेम कौन करता है? ❖

# बचिए व्यर्थ विचारों से

**व्यर्थ चिंतन क्या है?**

ऐसा चिन्तन जिसका कोई उद्देश्य न हो, जिसे करने से कोई सार्थक परिणाम सामने न आये सिवाय तनाव के, यही व्यर्थ चिन्तन है। इसी का परिणाम चिन्ता, तनाव, डिप्रेशन, ब्लडप्रेशर, सिरदर्द, बेचैनी, अनिद्रा आदि के रूप में सामने आता है।

**व्यर्थ चिन्तन का कारण**

बीती बातों को या भविष्य की बातों को अधिक सोचना, देह और देह से संबंधित बातों का अधिक चिन्तन करना, परदर्शन और परचिंतन करना, बुरे संग व राजसिक-तामसिक अन्न के प्रभाव में रहना, दिनचर्या का सेट न होना, नियमित सत्संग (मुरली सुनना) न करना तथा योग की कमी के कारण व्यर्थ चिंतन चलता है।

**व्यर्थ चिंतन से बचने का उपाय**

आत्म-अभिमानी अवस्था में रहने से, राजयोग का अभ्यास करने से, ज्ञान-मुरली सुनने व मनन करने से, दिनचर्या सुव्यवस्थित करने से, सृष्टि-चक्र का यथार्थ ज्ञान रखने से कि जो हुआ अच्छा, जो हो रहा है और अच्छा और जो होने वाला है, वह अच्छे से अच्छा है, संग की संभाल करने से, दिन में बीच-बीच में कई बार अटेंशन देकर स्व की चेकिंग करने से, विकारों से स्वयं को बचाकर रखने से, सर्व प्रति शुभभावना रखने से, अधिक से अधिक स्वयं को व्यस्त रखने से, बुरा न देखने, न सुनने, न बोलने और न पढ़ने से, दुनिया के बाहरी वातावरण को देखते हुए भी न देखने से व्यर्थ चिन्तन से बच सकते हैं।

व्यर्थ चिंतन या कहें परचिंतन पतन की जड़ है। इससे हमारा समय, श्वास और संकल्प शक्ति नष्ट होती है। कहा जाता है कि आत्मा के कमज़ोर होने के दो मुख्य कारण हैं, एक, ज्यादा बोलने से, दूसरा, ज्यादा सोचने से। व्यर्थ चिंतन की गति बहुत तेज़ होती है जबकि शुभ संकल्प धीमी गति से चलते हैं।

व्यर्थ विचार परमात्म याद में रहने में सबसे बड़े बाधक हैं। मन वह सेतु है जो आत्मा को या तो परमात्मा से जोड़ देता है या विकारों से। यदि हम मन के विचारों पर अटेंशन देकर इन्हें शुभ व समर्थ बना दें तो सहज ही व्यर्थ से मुक्ति हो जायेगी। यह ना सोचें कि मुझे व्यर्थ को समाप्त करना है बल्कि यह सोचें कि मुझे सदा शुभ व श्रेष्ठ विचार मन में लाने हैं। शुभ व श्रेष्ठ विचारों की शक्ति से व्यर्थ अपने आप ही समाप्त हो जायेगा।

संकल्प ही वाणी और कर्म का बीज होता है। जब संकल्पों को श्रेष्ठ व शक्तिशाली बना लेंगे तो बोल व कर्म अपने आप ही श्रेष्ठ बन जायेंगे। कहा भी जाता है, 'जैसी वृत्ति, वैसी दृष्टि और जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि'।

**– ब्रह्माकुमार प्रकाश, टोंक**

# वरदानीमूर्त दादी जी

• ब्रह्माकुमार बालू, शान्तिवन

जब मैं पहली बार मधुबन आया तो स्वप्न में भी नहीं सोचा था कि दादियों जैसी महान विभूतियों को भोजन बनाकर खिलाने का भाग्य प्राप्त करूँगा। मानो, भाग्य बनाने वाले भाग्यविधाता ने यह सौभाग्य मुझे स्वयं ही दिया।

जब दादी जी मधुबन से हफ्ते में एक या दो बार शान्तिवन में चक्कर लगाने आती थी तो दादी जी का भोजन बनाने की सेवा मिली। यहाँ से उनके करीब आना शुरू हुआ। एक बार हमसे मिलते समय दादी के मुख से जो अमूल्य शब्द निकले वो दिल में छप गये। दादी जी ने कहा, बाबा ज़िम्मेवारी ऐसे बच्चों को देता है जिन पर बाबा को विश्वास होता है। साथ-साथ जिम्मेवारी निभाने की शक्तियाँ भी बाबा प्रदान करता है। बाबा को सबसे प्रिय गुण है सच्चाई, सच्चाई के साथ दूसरे गुण आपेही आ जाते हैं। दादी जी के इन महावाक्यों ने मेरे जीवन को बहुत संवारा और सदा आगे बढ़ाया।

दादी जी ने सदैव अपने आपको विश्व की स्टेज पर समझा। 'मेरी हर एक्ट का प्रभाव सारे ब्राह्मण परिवार पर तो क्या, विश्व पर पड़ेगा', यह सदैव उनकी स्मृति में रहा। दादी जी का किचन से शुरू से विशेष लगाव रहा। हर रोज़ नाश्ता, भोजन पूछना तथा गुरुवार के दिन विशेष चक्कर लगाना, यह दादी जी के जीवन का एक अंग बन चुका था।

एक बार किचन में चक्कर लगाते समय दादी जी ने देखा, एक माता रोटी बनाते समय दुख के आँसू बहा रही थी। दादी जी ने उसे उठाया, प्यार से पूछा, क्या हुआ? माताजी ने कारण बताया तो दादी जी ने कहा, कारण कुछ भी हो लेकिन भोजन बनाते समय रोना, यह बाबा को बिल्कुल पसंद नहीं है, आप जाकर आराम करो। दादी जी ने ऐसा क्यों किया? क्योंकि कहते हैं, जो रोते-रोते भोजन बनाता है तो खाने वाले भी रोते हैं। अत: भोजन बनाने की सेवा बहुत खुशी, उमंग और योगयुक्त होकर करनी चाहिए ताकि खाने वाले की स्थिति भी वैसी ही बन जाये।

भारत के कई स्थानों पर दादी जी के साथ जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। जहाँ दादी की महिमा कोई करता तो दादी बाबा की तरफ इशारा करती थी, कहती थी, दादी, बाबा के कारण है, न कि दादी के कारण बाबा है, जिसने बनाया, उसको कभी नहीं भूलो, एक की महिमा करो।

मुरलीधर की मुरली से दादी का विशेष प्यार रहा। एक बार भोजन के टेबल पर बुलाकर अचानक मुझसे पूछा, आज बाबा ने मुरली में क्या बताया? मैंने जब वरदान, स्लोगन सब दादी जी को सुनाये तो दादी ने थैंक्स कहा, लेकिन उस दिन के बाद मैं और भी अलर्ट हो गया कि चाहे कुछ भी हो जाये लेकिन सोते समय भी और उठते ही मुरली जरूर पढ़नी है। दादी का पूछना मेरे लिए वरदान बन गया।

एक बार हम पांडव भवन के गेट से बाहर नक्की झील का चक्कर लगाने निकले, दादी जी की नज़र पड़ी। शाम के 6.30 बजे थे। हमको बुलाकर कहा, योग का समय हुआ है, चक्कर लगाने तो बाद में भी जा सकते हो लेकिन 6.30 से 7.30 बाबा ने योग का समय मुकर्रर किया है, तो इस समय योग ही करना चाहिए। दादी के वे बोल दिल में गहरे छप गये। आज भी शाम के 6.30 बजे कहीं भी होते हैं तो वे बोल याद आ जाते हैं कि दादी जी को निमित्त बनाकर बाबा ने मेरे कल्याण अर्थ कहा सो मुझे करना ही है।

ऐसी प्यार की प्रतिमूर्ति दादी जी के प्रति कितना भी लिखें, कम है। हम उनकी शिक्षाओं को जीवन में प्रत्यक्ष करके ही उनके प्यार का रिटर्न दे सकते हैं।

❖

# ब्रह्मचर्यम् परम् बलम्

• ब्रह्माकुमार अवनीश, रेनुकूट, सोनभद्र

जिस तरह से किसी मोटर में तेल कम हो या ना हो और ड्राइवर उसे स्टार्ट करने की कोशिश करे तो मोटर से ऐसी अप्रिय खचखचाने की आवाज़ निकलती है जैसे ज़बर्दस्ती किसी को घसीटा जा रहा हो। ठीक उसी तरह जिस शरीर में ब्रह्मचर्य रूपी तेल का अभाव होता है, उस शरीर को भी आत्मा रूपी ड्राइवर ठीक से संचालित नहीं कर सकता, फलस्वरूप, शरीर को पुरानी कार की तरह घसीटना पड़ता है। क्या आप भी अपनी ज़िन्दगी घसीटकर ही जीना चाहेंगे?

### पौराणिक दृष्टि से ब्रह्मचर्य का महत्त्व

हमारे भारत देश के प्राचीन ग्रंथों में मनीषियों ने ब्रह्मचर्य की खूब महिमा की है। आयुर्वेद में लिखा गया है, 'ब्रह्मचर्यम् परम् बलम्' अर्थात् ब्रह्मचर्य ही सर्व शक्तियों का स्त्रोत है। पौराणिक पात्र पवनसुत हनुमान, भीष्म पितामह तथा आधुनिक युग में स्वामी दयानन्द सरस्वती और स्वामी विवेकानन्द आदि हस्तियों ने ब्रह्मचर्य से ही परम यश को प्राप्त किया। स्वामी विवेकानन्द ने 'राजयोग' नामक अपनी पुस्तक में कहा है कि बिना ब्रह्मचर्य के कोई भी कभी योगी नहीं बन सकता। गीता में भी भगवान ने अर्जुन से कहा कि हे अर्जुन, तू बलपूर्वक इस काम महाशत्रु को मार डाल क्योंकि यह काम विकार ही तुझे आदि-मध्य-अंत दुख देने वाला है। यूनान के महान दार्शनिक सुकरात ने तो यहाँ तक कह दिया कि काम विकार के लोलुप मनुष्य को पहले अपने कफन और चिता का इंतज़ाम कर लेना चाहिए, बाद में चाहे जो करे। ब्रह्मचर्य मानव का आंतरिक सौन्दर्य है जिससे उसे तेज, उत्साह, कार्यक्षमता की वृद्धि आदि विशेषताओं की प्राप्ति होती है। इसलिए हर मनुष्य को चाहिए कि अब अपने कल्याण के बारे में सोचे और ब्रह्मचर्य का पालन करके संसार को बदलने का सहयोग देकर पुण्य का भागी बने।

### विद्यार्थी जीवन में ब्रह्मचर्य

यूँ तो ब्रह्मचर्य की धारणा संपूर्ण मानव जाति के लिए कल्याणकारी है परन्तु विद्यार्थियों के लिए तो यह किसी अचूक रामबाण दवा से कम नहीं है। शास्त्रों में भी वर्णित है कि कम से कम पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य का पालन करना आवश्यक है। यही एक ऐसी शक्ति है जिसके कारण स्मृति-शक्ति का निर्माण होता है। शरीर की नस-नाड़ियाँ पुष्ट रहती हैं, माँसपेशियों में ताकत भरी रहती है। श्वेताश्वतर उपनिषद् के श्लोक का अंश कुछ इस तरह है – 'लघुशरीरम्, मलमूत्र अल्पम्, वीर्यवानं विद्यार्थिनं' अर्थात् जिसका शरीर अधिक स्थूल न हो, जिसे बार-बार मलमूत्र त्यागने की कमज़ोरी न हो और जिसका वीर्य अर्थात् ब्रह्मचर्य या पवित्रता का एक कतरा भी व्यर्थ न गया हो, वही विद्यार्थी है। विद्यार्थी जीवन संपूर्ण जीवन का सबसे अनमोल समय होता है। इसी समय के आधार से हमारे जीवन के आगामी समय का निर्माण होता है। इसलिए हे विद्यार्थियो, आपको यह अमूल्य जीवन अश्लील साहित्य, अश्लील फिल्म और अश्लील चित्र आदि देखने में नहीं गँवाना चाहिए। अफसोस की बात है कि आज देश का युवावर्ग अपने लक्ष्य से भटक गया है और खुद को नशीली दवाइयों, शराब और चकाचौंध मचाने वाली दुनिया में खो चुका है। वह दुखी है मगर उसे पता नहीं कि वह क्यों दुखी है। सारे दुखों का कारण है अपवित्रता और आत्म-

ज्ञान का अभाव। चौराहों, सड़कों पर अधिकांशत: देखा जाता है, कंकाल की तरह ढाँचा लिए युवक, माँसविहीन खोखले सीने को उठाये, अपनी कमज़ोरी को छिपाते चलते हैं। पेड़ की छाल की तरह रूखे, सूखे और धँसे हुए गाल, कुएँ जैसी गहरी आँखें, ढीली और निचुड़ी हुई माँसपेशियाँ, अत्यधिक पसीने का आना, बदबूदार शरीर, तुरंत थकावट, हकलाहट, थोड़ी-सी अधिक धूप में आँखें बंद हो जाना, त्वचा का गुलाबी के बजाय पीला होना, किसी भी काम में मन न लगना, चिड़चिड़ापन, अत्यधिक क्रोध आदि वीर्यविहीन पुरुष के प्रमुख लक्षण हैं। वैसे तो अपवित्र आत्मा का पूरा शरीर ही रोगों का घर होता है लेकिन उपरोक्त लक्षण प्रमुख रूप से देखने को मिल ही जाते हैं जोकि वर्तमान मनुष्य की शारीरिक और मानसिक नपुंसकता के परिचायक हैं। इसलिए आज सभी जाति, धर्म, देश के लोगों को इस विषय पर गहराई से चिंतन करने की आवश्यकता है क्योंकि ब्रह्मचर्य का अभाव ही समस्याओं की शुरूआत है और ब्रह्मचर्य का पालन ही समस्त समस्याओं का अंत।

### ब्रह्मचर्य समय की माँग

वर्तमान हालात पर थोड़ा दृष्टिपात करें। चारों ओर हत्या, बलात्कार, गरीबी, भूखमरी, मिलावट, रिश्वतखोरी, धोखाधड़ी, महंगाई, बीमारी, प्राकृतिक आपदायें और बेरोजगारी आदि विकराल समस्यायें मुँह बाये खड़ी हैं। जान पड़ता है, अभी सबको खा जाना चाहती हैं। यह एक विचारणीय बात है कि आखिर इन सारी विषमताओं का मूल क्या है? इसका उत्तर यदि अपने ही बुद्धि-विवेक से तलाशा जाए तो हम पायेंगे कि अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि ही दुखों की जड़ है। अत: मेरे प्यारे भाइयो और बहनो, जनसंख्या वृद्धि का यह तूफान गर्भनिरोधक साधनों या सरकारों द्वारा चलाये गये बर्थकंट्रोल योजनाओं से नहीं बल्कि ब्रह्मचर्य के संयम से ही रुकेगा। बहुत-सी संस्थायें, सरकारें, दार्शनिक, कवि, लेखक आदि चाहते हैं कि संसार बदले मगर ब्रह्मचर्य की बात न होने से सारी बातें यथावत् ही रहती हैं। मानव के नकारात्मक आचरण के फलस्वरूप पूरी प्रकृति गंदी और दूषित हो गई है। हमें यह बात महसूस करनी चाहिए कि आखिर जनसंख्या इस कदर ही बढ़ती रही तो दुनिया कहाँ जायेगी। सारी बातों को ध्यान में रखते हुए माँ भारती हमसे पवित्रता का सहयोग चाह रही है। फैसला आपके हाथों में है। वर्तमान समय में ब्रह्मचर्य का पालन ही संसार के लिए आपका सर्वश्रेष्ठ सहयोग है।

### बच्चों को कोकशास्त्र की नहीं, योगशास्त्र की शिक्षा मिले

मानवता के लिए यह बड़े ही शर्म की बात है कि आज विद्यार्थियों को काम कला की जानकारी दी जा रही है। इंसान अपना वास्तविक स्वरूप भूलने के कारण इतना गिर गया है कि अंदाजा लगाना भी मुश्किल है। जिस काम विकार के कारण बाप अपनी बेटी और भाई अपनी बहन तक को अपनी हवस का शिकार बनाने से नहीं चूकता, हाय रे! उसी ज़हर को विद्यालयों रूपी मंदिरों में किताबों के ज़रिए सचित्र परोसा जा रहा है। हमारी पुरातन संस्कृति पच्चीस वर्ष तक ब्रह्मचर्य की शिक्षा देती थी लेकिन आधुनिक संस्कृति तो पच्चीस वर्ष के पहले ही काम विकार के नाले में बहा दे रही है। आज भले ही विज्ञान ने हमें चलचित्र दिए हैं मगर चरित्र छीन लिया। फिल्मों और विज्ञापनों में अभद्र अंग प्रदर्शन से हमारे समाज में बहुत से युवक-युवतियाँ उनकी नकल करके पथभ्रष्ट हो जाते हैं, घर छोड़कर भाग जाते हैं, कन्यायें विवाह के पूर्व ही गर्भवती हो जाती हैं। आये दिन अस्पतालों में

अविवाहित कन्याओं के गर्भपात के मामले प्रकाश में आते हैं। इतना होने के बावजूद भी समाज के धुरंधरों की आँखें नहीं खुल रही हैं लिहाजा कोक शास्त्र की शिक्षा दी जा रही है। यदि हम सुधार चाहते हैं तो, हमें शिक्षा में मूल्यों का समावेश करते हुए नई पीढ़ी को भोग के बजाय योग की शिक्षा देनी होगी, तभी बात बनेगी।

**सर्व के लिए ईश्वरीय फरमान**

एक प्रसिद्ध कहावत है, 'बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुध ले' अर्थात् जो हुआ सो हुआ मगर अब से हमें खुद को बदल कर स्वपरिवर्तन से विश्व परिवर्तन के स्लोगन को चरितार्थ करना है। इसलिए सर्वविदित हो कि वर्तमान समय संपूर्ण सृष्टि के परिवर्तन का समय है। अब स्वयं परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में प्रविष्ट होकर पिछले 74 सालों से ब्रह्मचर्य (पवित्रता) का पाठ पढ़ा रहे हैं। परमपिता कह रहे हैं कि मीठे बच्चो, वर्तमान में संगमयुग चल रहा है, तुम खुद को ज्योतिबिन्दु आत्मा समझकर मुझ परमधाम निवासी पिता को प्यार से याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्म के पाप कट जायेंगे, तुम संपूर्ण पवित्र बन जायेंगे और भविष्य देव-पद के अधिकारी होंगे। इसलिए विष पीना बन्द करो और मनसा, वाचा, कर्मणा ब्रह्मचर्य का पालन करो क्योंकि निकट ही महाविनाश के द्वारा जनसंख्या कंट्रोल होना ही है इसलिए पवित्र बनो, योगी बनो और बनाओ, यही ईश्वरीय फरमान है। इस विकारी दुनिया को देखकर दिल तो यही कह रहा है कि

**विष का पीना बंद करो, पावन बनो बनाओ**
**ब्रह्मचर्य का पालन कर, दुनिया बदल दिखाओ।**
**बिगुल बजा दो दुनिया में, परमपिता है आया**
**जिसने उसको पहचाना, उस पर उसका साया।**
**परमधाम से आया है सत्यम् शिवम् सुन्दरम्**
**ब्रह्मा मुख से कहता है ब्रह्मचर्यम् परम् बलम्।**

# ओमशान्ति का महामंत्र

• **ब्रह्माकुमार रामेश्वर साहू, फिंगेश्वर (रायपुर)**

संसार में जब-जब अत्याचार, पापाचार और भ्रष्टाचार की वृद्धि होती है, मानव मन अशांत और दुखी हो जाता है, भय के साये तले जीवन व्यतीत होने लगता है, चारों तरफ महाविनाश के काले बादल मंडराने लगते हैं, प्रकृति के पाँचों तत्व विनाश का तांडव नृत्य करते हैं, धर्मसत्ता धारणा-विमुख तथा शक्तिहीन हो जाती है, रक्षक ही भक्षक बन पड़ते हैं, राजनीति कूटनीति का रूप ले लेती है, बड़े-बड़े साधु-संन्यासी-तपस्वी भी साधना से डिग जाते हैं, विज्ञान का अंधाधुंध विकास लोगों की सुख-शांति का नाशक बन जाता है, विकार नंगा नाच करने लगते हैं, इंसानियत, आध्यात्मिकता, नैतिक मूल्य दम तोड़ने लगते हैं, भाई-भाई एक-दो के खूने के प्यासे हो जाते हैं, तब संसार रूपी रंगमंच पर निराकार ज्योतिस्वरूप सर्वशक्तिवान परमपिता परमात्मा का दिव्य अवतरण एक साधारण व वृद्ध तन में होता है। उनके मुखकमल द्वारा भगवान, आत्माओं को ओमशांति महामंत्र के अर्थस्वरूप में टिकाते हैं। जो व्यक्ति ओमशांति के महामंत्र को जीवन में उतार लेता है, ओमशांति का स्वरूप बन जाता है, वो महान बन जाता है।

किसी के भी मन में यह प्रश्न आना स्वाभाविक है कि ओमशांति क्या है? इसका क्या अर्थ होता है? ओमशांति छोटा-सा शब्द है लेकिन यह अपने में कई गहराइयों को समाये हुए है। इसके तीन महान अर्थ होते हैं जिनको पूर्ण रीति समझने से तथा आचरण में लाने से हमारा जीवन श्रेष्ठता की ओर तेज गति से अग्रसर होने लगता है। आइये, अर्थ की ओर चलें –

## ओम् अर्थात् अहम् आत्मा
## (मैं एक आत्मा हूँ)

आत्मा के बारे में यह सर्वविदित है कि न तो इसे अग्नि जला सकती है, न पानी डुबो सकता है और न ही हवा उड़ा सकती है। आत्मा अजर, अमर, अविनाशी है। शरीर पैदा होता है और मर जाता है लेकिन आत्मा न कभी पैदा होती है और न ही मरती है। आत्मा मात्र इस शरीर रूपी वस्त्र को धारण करती है और आयु पूरी हो जाने पर शरीर का त्याग कर देती है। तो यह हुआ ओमशांति का पहला अर्थ। आत्मा जब शरीर से अलग होती है तो शांत हो जाती है। बच्चा जब छोटा रहता है तो उसकी कर्मेन्द्रियाँ छोटी रहती हैं, उसके मुख पर शांति झलकती है। जब कोई संन्यासी शरीर छोड़ता है तब सन्नाटा छा जाता है। इसका अर्थ स्पष्ट है कि शरीर से अलग होने पर आत्मा अपने स्वधर्म अर्थात् शांति की स्थिति में आ जाती है और शरीर में आते ही रोना, हँसना, चीखना, चिल्लाना इत्यादि क्रियाएँ करती है। आत्मा के अस्तित्व को सभी धर्मों ने स्वीकार किया है। आज इस संसार में अनेकानेक बातों पर झगड़ा मचा हुआ है, सबसे ज़्यादा झगड़ा है धर्म के नाम पर। अगर दुनिया को मालूम हो जाए कि हम सभी आत्मायें शांतस्वरूप हैं, हमारा स्वधर्म शान्ति है तो जाति-धर्म के सभी झगड़े समूल नष्ट हो जायेंगे।

## ओम शान्ति अर्थात्
## मुझ आत्मा का घर शांतिधाम है

शान्तिधाम को ही परमधाम, निर्वाणधाम, मुक्तिधाम, आत्मलोक तथा रूहानी दुनिया के नाम से भी जाना जाता है। जिस प्रकार इस दुनिया को मनुष्यों की दुनिया कहा जाता है, उसी प्रकार इस भौतिक जगत से दूर चाँद-सूर्य-तारागण से पार एक ऐसा ज्योतिर्मय लोक है जहाँ पर आत्मायें अति सूक्ष्म बिन्दु रूप में, गहन शान्ति की स्थिति में, सुषुप्त अवस्था में रहती हैं, जिसे छठा तत्व अथवा ब्रह्म तत्व कहा गया है। उस रूहानी लोक से रूह अर्थात् आत्मा नीचे उतर कर प्रकृतिकृत शरीर में प्रवेश करती है और पार्ट प्ले करती है। आत्मा और शरीर का उदाहरण सी.डी. और प्लेयर से भी ले सकते हैं। जैसे छोटी-सी सी.डी. में 10 से 15 घंटे तक का गीत या डायलाग रिकार्ड रहता है, दिखने में नहीं आता लेकिन जैसे ही सीडी को प्लेयर में डालते हैं, गीत, डायलाग इमर्ज होते जाते हैं। उसी प्रकार, आत्मा शरीर में प्रवेश होती है तो आत्मा के संस्कार, शक्ति, गुण इमर्ज होने लगते हैं। जब आत्मा का पार्ट एक शरीर द्वारा पूरा हो जाता है तो उस पुराने शरीर को यहीं छोड़, पुनः नये शरीर में प्रवेश हो जाती है। कल्प के अंत में परमधाम लौटती है। इस प्रकार सभी आत्माओं का मूल घर शांतिधाम है जहाँ गहन शांति ही शांति है।

## ओमशांति अर्थात्
## आत्मा के पिता शांति के सागर परमात्मा हैं

दुनिया में प्रकृति की रचना बहुत सुंदर और नियम प्रमाण बनी हुई है। जो व्यक्ति जैसा होता है उसकी रचना भी वैसी ही होती है। जानवर का पुत्र जानवर जैसा, पक्षी का पुत्र पक्षी जैसा, पेड़ का पुत्र पेड़ जैसा, इंसान का पुत्र इंसान जैसा, उसी प्रकार निराकार परमात्मा की सन्तान आत्मा भी उनके ही जैसी निराकार ज्योतिबिन्दुस्वरूप है। आज हर व्यक्ति भगवान से सुख और शांति की कामना करता है। जब भी कोई दुख की परिस्थिति आती है तो भगवान से कहता है, हे प्रभु, शांति दो। जाने-अनजाने में शांति के लिए भगवान को ही याद करता है क्योंकि अंतरात्मा जानती है कि आत्माओं का पिता परमात्मा ही शांति का सागर है जिससे सारी दुनिया शांति की शक्ति माँगती है।

ओमशांति के उपरोक्त तीनों अर्थ जीवन व्यवहार में आ जाते हैं और हम उस स्मृति में निरंतर रहते हैं तो एक अभूतपूर्व परिवर्तन आने लगता है। जीवन दिव्यता तथा श्रेष्ठता की ओर अग्रसर होने लगता है।

❖

# बाबा से मिला, स्नेह व सहयोग का महामंत्र

• ब्रह्माकुमार डॉ.अजीत सिंह राणा, डायरेक्टर, मातूराम इंस्टीच्यूट ऑफ मैनेजमेंट, रोहतक

सन् 1985 के दौरान मैं सरकारी महाविद्यालय, झज्जर (हरियाणा) में व्याख्याता के पद पर कार्यरत था। लौकिक दृष्टि से सब कुछ बढ़िया था परंतु मन में कुछ बेचैनी हुई कि क्या यही जीवन का उद्देश्य है, कार्य करना, भोजन खाना और सो जाना? यदि यही जीवन है तो मनुष्य के जीवन और पशु के जीवन में कोई खास अंतर नहीं है।

### दुख भरी गुहार

उस बेचैनी के कारण मैंने संध्या करना शुरू किया तथा कुछ मंत्रों का जाप करने लग गया जिनका सही अर्थ भी नहीं आता था। इसके 10-15 दिनों बाद फिर मन में बेचैनी हुई कि तुमको मंत्रों से मिलना है या भगवान से मिलना है? कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा था। मन बड़ा उदास हुआ तथा बेचैनी घटने के बजाय और भी बढ़ गई। फिर एक दिन अंदर से बड़ी दुख भरी गुहार निकली कि प्रभु, अपना रास्ता बताओ, मैं आपसे मिलना चाहता हूँ। यह सूक्ष्म आवाज़ इतनी दुख भरी थी कि आँखें आँसुओं से नम हो गई। कुछ दिन बाद ही किसी ने मुझे बताया कि ब्रह्माकुमारियों का ज्ञान बड़ा अच्छा है तथा सेवाकेन्द्र का पता भी बताया जो मेरे घर से ज्यादा दूर नहीं था। अब मुझे महसूस होता है कि यह कार्य उस ऊपर बैठे जादूगर भगवान का ही था। यह मेरे लिए ऐसा ही था जैसे कोई छोटा बच्चा भूख के मारे चिल्लाता है तो उसकी माँ दौड़ी चली आती है। इसके तुरंत बाद मैंने अपने दो साथियों के साथ साप्ताहिक कोर्स झज्जर के सेवाकेन्द्र से संपन्न किया।

### निरीक्षण

बाबा के ज्ञान में पदार्पण तो हो गया परंतु ज्ञान के अनेक बिन्दुओं पर बुद्धि की स्वीकृति नहीं मिली। कोर्स के दौरान बताया गया कि परमात्मा निराकार है और वह ज्योतिबिन्दु है। मन में प्रश्न उठा कि यदि वह ज्योतिबिन्दु है तो चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो वह निराकार नहीं हो सकता, दोनों बातें कैसे हो सकती हैं आदि-आदि। ड्रामा के ज्ञान को भी बुद्धि स्वीकार नहीं करती थी। ऐसे अनेक प्रश्नों के कारण निर्णय करने की समस्या आ गई कि क्या ज्ञान अपनाया जाये या नहीं? स्वामी विवेकानन्द की किसी पुस्तक में पढ़ा था कि परमात्मा रूपी प्रश्न को जब तक अपने ऊपर लागू करके परीक्षण नहीं कर लेते तब तक उसको नकारने का आपको अधिकार नहीं है। अंतत: मेरा निर्णय यह हुआ कि प्रश्नों को छोड़कर ज्ञान की जाँच की जाये। मैंने आश्रम पर जाकर ब्रह्माकुमारी बहन से सभी धारणा संबंधी नियम ज्ञात कर लिये और उन पर चलना प्रारंभ कर दिया।

### संघर्ष

प्रारंभ के तीन महीनों तक नियमों पर चलना मेरे लिए कुछ कठिन रहा जैसे अमृतवेले सुबह चार बजे कभी उठ पाता, कभी नहीं। ईश्वर की याद कुछ देर ठहरती फिर गायब हो जाती। काम विकार ने भी तंग किया पर बाबा के प्यार के आधार पर संतुष्ट रह आगे बढ़ता रहा। ज्ञान-मुरली निरंतर सुनता रहा, उससे बल मिलता रहा। उन्हीं दिनों पांडव भवन में योग शिविर में भी शामिल होने का सुअवसर प्राप्त हुआ। तदुपरांत ज्योतिबिन्दु की स्मृति कुछ ठहरने लगी। सूक्ष्म परीक्षण के आधार पर अपना पुरुषार्थ बढ़ाना शुरू किया। पहले दो मिनट निरंतर याद किया फिर सोचा, पाँच मिनट भी निरंतर याद रह सकती है। फिर पाँच मिनट से दस मिनट, फिर आधा घंटा तथा इस प्रकार निरंतर याद को घंटों तक बढ़ाने में सफल रहा। यह सफलता तीन महीने के संघर्ष के बाद ही प्राप्त हो सकी। पैदल चलते हुए तथा सफर करते हुए भी मैं स्मृति का प्रयास करता रहता। इस प्रकार, बाबा को याद करना मन को अच्छा लगने

लगा तथा रस आने लगा।

### परिणाम व प्राप्ति

चार महीने के पुरुषार्थ के बाद परमधाम में रहने वाले परमात्मा ज्योतिबिन्दु में मन स्वत: लगने लग गया तथा खुशी भी प्राप्त होने लगी। यहाँ तक कि मित्र आदि घर पर आते तथा चाय पी रहे होते तो भी मेरा मन अपने आप ऊपर ज्योतिबिन्दु में जा लगता तथा वहाँ से हटना नहीं चाहता। लोग कहते हैं कि मन भगवान में लगता नहीं, मैं कहता था कि मन हटता नहीं, हटाना पड़ता है। जब कभी मैं बाबा को याद नहीं करता था तो बाबा ही ऊपर खींच लेते। इस प्रकार, घंटों तक विशेष आनन्द की अनुभूति होने लगी जो लौकिक चीज़ों में कभी नहीं मिलती थी। छह महीने बीतने के बाद कुछ बातों की पहले से ही जानकारी भी प्राप्त होने लगी।

एक बार बाबा की ओर से बड़ी खींच का अनुभव हो रहा था। मानसिक ऊर्जा, सूक्ष्म रश्मियों के रूप में निरंतर ऊपर जा रही थी। मैं बड़ा आनन्दित था क्योंकि बिना कुछ किये सब अपने आप ही बाबा कर रहा था। मैं द्रष्टा मात्र बन आनन्द के हिलोरे लेता रहता था। एक दिन सुबह स्नान करते ही फिर ऊर्जा की रश्मियाँ निकल कर ऊपर की ओर जाना शुरू हो गईं। बड़ा आनन्द आ रहा था। कपड़े डाल कर मैं बाबा की याद में जा बैठा। लगभग दो मिनट बाद ही मेरा सूक्ष्म शरीर हलके झटके के साथ स्थूल शरीर से ऊपर निकल गया। शायद उस अवस्था के लिए मैं अभी तैयार नहीं था। इसी कारण तुरंत भय आया कि कहाँ जा रहा हूँ। छोटे बच्चों तथा पत्नी का ध्यान आते ही मैं पुन: स्थूल शरीर में आ टिका।

### निश्चय

सूक्ष्म शरीर का साक्षात्कार होते ही ज्ञान की सत्यता पर निश्चय पक्का हो गया। बुद्धि ने स्वीकार कर लिया कि सूक्ष्म शरीर भी है व आत्मा भी है, जो इस स्थूल शरीर से न्यारी और प्यारी है। बाबा ने मुरलियों के माध्यम से बताया है कि बच्चे, स्नेह और सहयोग से आगे बढ़ो, न कि तोड़-फोड़ करके। बाबा की यह बात पसंद आई तथा धारण भी कर ली। बाबा से अनुमति लेकर लौकिक ज़िम्मेदारियों को पूरा किया।

### अनेक आत्माओं का कल्याण

बाबा के स्नेह व सहयोग के महामंत्र को जीवन में लागू करने से अनेक आत्माओं का सौभाग्य बन रहा है। अब मेरी युगल भी ज्ञान में चलती हैं। पिछले वर्ष से हमने अपने घर पर ही गीता पाठशाला शुरू की है जहाँ 15-16 आत्मायें ज्ञान अमृत पी रही हैं। मेरे पिताजी ने भी बाबा का ज्ञान लिया और बाबा के बन गये तथा पुरुषार्थ में मेरे से कहीं आगे निकल गये। उन्होंने अपने गाँव में बाबा के आशीर्वाद से गीता पाठशाला शुरू करवाई जहाँ आज 20-30 आत्मायें क्लास में निरंतर हाजिर होती हैं। इस प्रकार अनेक आत्माओं का कल्याण हो रहा है।

### स्व-कल्याण

मैंने जब बाबा का ज्ञान लिया तब मैं पी.एच.डी. डिग्री के लिए शोध कार्य कर रहा था। शोध कार्य में बाबा की विशेष मदद मिलती थी। इस कारण शोध कार्य के दौरान ही मेरे अनेक शोध-पत्र राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय जर्नल्स में प्रकाशित हुए। इसी के आधार पर तथा बाबा के आशीर्वाद से मैं कॉलेज से निकलकर महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी, रोहतक में अर्थशास्त्र के प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष आदि पदों पर रहा। बाबा की कृपा से मेरी बेटी आज यूनिवर्सिटी में ऐसोसिएट प्रोफेसर तथा बेटा आर्मी में मेजर के पद पर है।

### निष्कर्ष

बाबा के साथ हमेशा सच्चाई से चलने का प्रयास करता रहा हूँ। इसी के परिणामस्वरूप उनके स्नेह व सहयोग के महामंत्र ने मेरा व अनेक आत्माओं का कल्याण किया है। सन् 2007 से सेवानिवृत्त होकर अब बाबा की सेवा समर्पित भाव से कर रहा हूँ।

❖

# सहज जीवन

• ब्रह्माकुमारी सुजाता, मथुरा

''भावना जब निखरती है
तो प्रीत बन जाती है
कविता जब निखरती है
तो गीत बन जाती है।
प्रभु प्रेम में ज़िन्दगी जब पलती है
तो जीवन-संगीत बन जाती है।।''

जीवन में भाग्य और कुदरत के प्रभाव को तो हम नहीं टाल सकते किन्तु कुम्हार की तरह कुछ निर्माण अवश्य कर सकते हैं। किसका निर्माण? ज़रूरत है एक चमत्कारिक सोच अर्थात् स्वस्थ दृष्टिकोण का निर्माण करने की। ऐसी सोच जो जीवन को न केवल सरल और सहज बनाए बल्कि उसे खुशियों से भर दे।

**विशेषताएँ देखिए, दोष नहीं**

सृष्टि विविधताओं का अनोखा संगम है। प्रत्येक वस्तु और मनुष्य का अपना-अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। चारित्रिक विशेषताएँ तथा दोष भी किसी भी व्यक्ति में मिल सकते हैं परंतु महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हम उसमें क्या देखते हैं? हमारा दृष्टिकोण सकारात्मक है या नकारात्मक? फूल की सुन्दरता और उसकी खुशबू देखें, उसके काँटे नहीं क्योंकि कहावत है, बंद घड़ी भी दिन में दो बार ठीक समय देती है। यही सकारात्मक सोच है जो जीवन को सहज, सरल और प्रेरणादायी बना देती है। जब भी हम किसी महान उद्देश्य को लेकर कार्य करते हैं तो अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है किन्तु हमारी दृष्टि यदि सदा श्रेष्ठ और शुभ व्यक्तित्व के निर्माण की ओर लगी है तो सुन्दर, सुखद और सहज जीवन की रचना होती है। इसके विपरीत, यदि जीवन में आई हर बात को लेकर हम प्रतिक्रिया करते हैं तो हमारे चारों ओर एक मकड़जाल बन जाता है जिसमें उलझन, हताशा और निराशा के अलावा और कुछ नहीं होता है। समस्याओं में उलझा प्राणी सबकी ओर प्यासी, आस भरी नज़रों से निहारता है कि कोई उसकी भी सुने, कोई उसे भी मदद करे।

**संघर्षों का मूल है स्वार्थ**

अगर हम अपने समस्त व्यवहारों का विश्लेषण करें तो पायेंगे कि स्वार्थ और अहम् भाव ही सभी संघर्षों एवं अमानवीयता का मूल है। मैं ठीक हूँ, दूसरा ग़लत है, यह विचार हमें अंदर से विचलित करता है। कई बार तो मनुष्य का स्वार्थ अथवा अहम् भाव बाहर से बहुत ही चमत्कृत, अलौकिक अथवा सुन्दर रूप ले लेता है। दूसरे शब्दों में, स्वार्थ रूपी काले भूत, मन को मोहित करने वाली अप्सरा का रूप ले लेते हैं। हमें भ्रम हो जाता है कि अमुक कार्य करने से हम यज्ञ या संसार की सेवा कर सकेंगे परंतु गुप्त भावना स्वार्थ की पूर्ति की, मान-शान को बढ़ाने की अथवा दूसरों से होड़ करके उन्हें मात देने की होती है और इस दुर्भावना से ग्रसित होने की वजह से हम दिव्य मर्यादाओं को तोड़ने के लिए उद्यत हो जाते हैं। शुभ लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए हम, त्याग और परोपकार के पथ से हटकर अधिकारों-आकांक्षाओं में लगकर कब साधना, सादगी, सद्भावना एवं सद्व्यवहार से कोसों दूर हो गए और सहज जीवन के पथ में काँटे बो लिए, पता ही नहीं पड़ता है।

**विनम्रता बनाती है**
**ईश्वरीय कृपा का पात्र**

जीवन की यथार्थता व सहजता बनी रहे, उसके लिए सदैव याद रहे कि हम जिस राह के राही हैं, उसका साथी स्वयं जगत नियन्ता परमपिता है। उसने हमें इस दुनिया के सभी झंझावातों से दूर करके नव सृजन करने के लिए चुना है और यदि हम फिर भी कहीं भटक गये तो इस जीवन की सुन्दरता या महानता ही खत्म हो जायेगी। तो आइये, हम अपने मैं और अहम् को प्रभु के सम्मुख अर्पण करके मन से समर्पित हो जायें क्योंकि प्रकृति का नियम है कि जहाँ जमीन नीची और गहरी होती है वहीं वर्षा का जल इकट्ठा होता है। वह ऊँचे पर्वतों पर नहीं ठहरता है। ठीक इसी तरह स्वयं को विनम्र बनाकर ही ईश्वर की कृपा का पात्र बना जा सकता है। इसी

से जीवन में समरसता व सहजता आती है। जहाँ मैं के मिथ्या अहम् का त्याग है वहाँ सारी भावनायें एवं स्मृतियाँ एकमात्र परमात्मा से जुड़ जाती हैं। जहाँ जीवन में सिर्फ उसी की याद बनी रहती है, वहाँ स्वयं ईश्वर हमें अपने दिल में स्थान दे देते हैं। ईश्वर की याद जितनी गहरी और जितनी अडिग है उतना हमारा जीवन सहज, सरल, सुखमय और शान्ति की किरणों से जगमगा उठता है। यही प्रभु-प्रेम में पला संगमयुगी जीवन हमें सतयुगी देवपद दिलाता है। प्रभु की इस अनुकम्पा प्रति दिल यही कहता है

**'लोगों को जो मिला,**
**उनके मुकद्दर से मिला है**
**लेकिन प्रभु मुझे तो मुकद्दर भी**
**तेरे दर से मिला है।'**

# चौरासी जन्म सफल हुए

सन् 1982, अप्रैल का वो प्रथम अव्यक्त मिलन स्मृति पटल पर अविनाशी रूप से अंकित हो गया। मैं 13 दिन तक मधुबन में रहा। बापदादा से पाँच बार मिलन हुआ। प्रथम बार ही, 12 मिनट तक अव्यक्त बापदादा के सम्मुख था। बाबा ने दृष्टि देकर मुझे तीन वरदान दिये – बच्चे महावीर हो, मायाजीत हो और विजयी रतन हो। ये वरदान मेरे जीवन में अविनाशी बन गये। मुझे परमात्म शक्ति प्राप्त हो गई और मैंने तब से ही सदा के लिए पवित्रता का व्रत धारण कर लिया।

ज्ञान मार्ग में चलते हुए बहुत सारे उतार-चढ़ाव, प्रतिकूल परिस्थितियाँ, हिमालय समान विघ्न व सुनामी जैसे तूफान सामना करने आये। हर तूफान में बाबा के दिये हुए तीनों वरदान मदद करते रहे। वरदान याद आते ही स्थिति एकरस हो जाती थी और मैं चिन्तामुक्त हो जाता था। इन विघ्नों ने मुझे महावीर तथा अनुभवी बनाया व परमात्म समीपता का अनुभव कराया।

जैसे बहती हुई नदी, जो कुछ सामने आया, उसे स्वीकार कर लेती है, न कोई टक्कर, न वैरभाव। कोई किचड़ा डाले तो वह उसे पौधों की खुराक बना देती है और अनेकों को जीवनदान देते हुए आगे बढ़ती है, ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ है। मैं एकांत साधना को अति आनन्दकारी महसूस करता हूँ। मेरा बहुत समय विश्व को सकाश देने में व्यतीत होता है। सोते हुए विशेष रूप से मेरा अभ्यास रहता है, मैं लाइट के कार्ब में हूँ..। मैं बाबा को कहता हूँ कि मैं आपकी गोद में सो रहा हूँ..मुझे सुबह तीन बजे उठा देना..और प्रतिदिन वैसा ही होता है।

सतहत्तर वर्ष की आयु, ब्लडप्रेशर व कैड के कारण मुझे कार्य में थकान होती है। मैं बाबा का आह्वान करता हूँ – प्यारे बाबा, मेरे साथी, आ जाओ, मदद करो, मेरी थकान उतारो और मुझे बाबा की उपस्थिति व मदद का एहसास होने लगता है। मैं सारे दिन में कई बार बाबा का आह्वान करता हूँ और हर बार उसे अपने पास पाता हूँ। मेरा पूरा दिन आनन्दमय, हलकेपन के अनुभव में व ईश्वरीय संग में बीतता है। मैं बहुत खुश व संतुष्ट रहता हूँ।

जीवन की यात्रा में भगवान मेरा दोस्त बन गया। मुझे अनेक महान आत्माओं का स्नेह, पालना व संग मिला। मेरा लक्ष्य रहता है कि जो भी संपर्क में आये, उसे कुछ न कुछ प्राप्ति अवश्य हो। इस अंतिम जन्म में परमात्म साथ पाकर लगता है कि पूरे ही 84 जन्म सफल हो गये।

**– ब्रह्माकुमार नंदी, कोलकाता**

# मोह भंग हुआ तो मिला खुदा दोस्त

• ब्रह्माकुमार बृजेन्द्र कुमार शर्मा, चंडीगढ़

जिन दिनों मैं डिफ़ेन्स में (राजस्थान में) वेलफ़ेअर सेन्टर में सेवारत था उन दिनों एक नया अधिकारी वेलफेयर सेन्टर का इंचार्ज बना। उसकी पहली पोस्टिंग थी, बहुत ही सीधा-सादा था। वेलफ़ेअर सेन्टर की शॉपिंग के लिए हम साथ जाते, मुझे उसका स्वभाव अच्छा लगा, बहुत दोस्ती हो गई। मेरे मन में डर था कि जवान अधिकारी कभी किसी के दोस्त नहीं हो सकते। उनसे पूछा तो बोले, हम इन्सान हैं, हम अच्छे मित्र हैं।

वह मेरे घर आता, बच्चों के साथ खेलता, उसका हर काम करने में मुझे अच्छा लगता मानो मुझे एक छोटा भाई, एक दोस्त मिल गया। कुछ दिनों के बाद उसे कमांडो ट्रेनिंग के लिए जाना पड़ा। उसके प्रति मेरा लगाव इतना बढ़ गया था कि मुझे उसकी दूरी से डिप्रेशन हो गया। कमांडो ट्रेनिंग के दौरान भी उसको मिलने गया। धीरे-धीरे वह मुझसे दूरी बनाने लगा, मेरा डिप्रेशन बढ़ने लगा, मैं नींद की गोलियाँ लेने लगा।

एक बार मैं राजस्थान, वाया आगरा आ रहा था। वह भी अल्पकाल की ड्यूटी पर आगरा में था। मैंने ट्रेन पकड़ने से पहले उससे कहा, मुझे आगरा रेलवे स्टेशन पर रिसीव कर लेना, एक दिन तेरे साथ घूमूँगा, फिर वापस राजस्थान आ जाऊँगा। उसने कहा, मुझे दोस्तों के साथ डांडिया देखने जाना है। मुझे बुरा लगा, बिना आगरा रुके मैं वापस आ गया, दिल काफी उदास हुआ। ऐसा ही उसने एक-दो अन्य अवसरों पर किया। मेरा डिप्रेशन बढ़ता गया। कोर्स के बाद जब वो राजस्थान लौटा, मैं उससे मिलने गया। उसने मुझे बहुत अपमानित किया।

मेरा दिमाग काम नहीं कर रहा था, अपमान भरी बातें बार-बार दिमाग में गूँजती। मुझे बीकानेर में पागलों के डॉक्टर से मिलना पड़ा। डॉक्टर ने मुझे तीन महीने की दवाई दी, दवाई चलती रही, दिमाग कमजोर हो गया। माँ-बाप पूजा-पाठ करवाते रहे। मेरी एक दीदी ब्रह्माकुमारी आश्रम जाती है। मैं उसके पास बैठकर बहुत रोया, दीदी, मुझे बचा लो। उसने कहा, सब छोड़ दे, शिव बाबा को याद कर।

मेरा तबादला चंडीगढ़ में हो गया। वहाँ मैं एक ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र की निमित्त बहनजी से मिला, वहाँ भी बहुत रोया, दीदी,

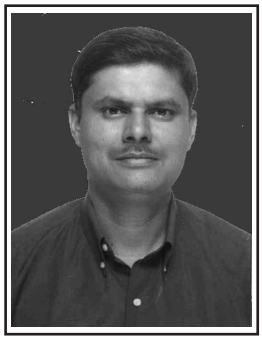

मुझे बचा लो, मेरी दो छोटी बेटियाँ हैं, मुझे ठीक कर दो। निमित्त बहन ने मुझे बहुत स्नेह दिया। मुझे सात दिन का कोर्स करवाया, ज़िन्दगी का मतलब समझाया। धीरे-धीरे सब हलका होने लगा, मुरली सुनने लगा, शिवबाबा का आशीर्वाद मिलने लगा। घर में, बच्चों में, नौकरी में ध्यान देने लगा। अब मैं बाबा का प्यारा बच्चा हूँ। No attachment, No pain. मैं उस आत्मा का धन्यवादी हूँ, वही मुझे शिवबाबा से मिलाने के निमित्त बना। ड्रामा में, मेरे कल्याण के निमित्त बना। रात के बाद ही सवेरा होता है।

मेरा एक रिश्तेदार पीजीआई चंडीगढ़ में पागलखाने में भर्ती है, उससे मिलने जाता हूँ, अपनी डायरी साथ ले जाता हूँ, लोग अच्छे-से ज्ञान सुनते हैं, खुश होते हैं। अब बाबा ने मुझे सबको ज्ञान सुनाने और खुशियाँ बाँटने की विशेष सेवा प्रदान की है।

# जन्मदिन की सौगात

• ब्रह्माकुमार रमेश, अंबाजी

**मैं** बचपन से ही मातपिता के प्यार से वंचित रहा। माँ की मृत्यु के बाद तो जीवन से प्यार का नामोनिशान मिट गया। तब से बुरे संग के कारण अनेक बुरी आदतों और व्यसनों का शिकार हो गया। शराब के साथ-साथ अनेक छोटे-बड़े व्यसनों का मैं प्रतिदिन सेवन करता था। व्यसनों के जाल से छूटना नामुमकिन लगता था। क्रोध भी बहुत था। छोटी-छोटी बातों में लड़ाई-झगड़ा करना, मारना-पीटना ये मेरे लिए बहुत साधारण बातें थीं। उस कारण पुलिस बार-बार मेरे घर आती रहती थी। लोग भी मेरे से बहुत परेशान थे। मेरी पत्नी और मेरी दो बहनें, जो लौकिक संबंध से सगी नहीं हैं लेकिन छह-सात साल से मुझे राखी बाँधती हैं, मेरी बुरी आदतें और व्यसन छुड़ाने की बहुत कोशिश करती थीं लेकिन मैंने किसी की नहीं सुनी।

### मेरे मन में थीं भ्रान्तियाँ

मेरी ये दोनों बहनें ज्ञान और राजयोग सीखने ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में जाती हैं। उन्होंने मुझे भी वहाँ ले जाने की बहुत कोशिश की लेकिन मैं कुछ न कुछ बहाना बनाकर मना कर देता। मेरे मन में ब्रह्माकुमारी संस्था के प्रति भ्रांतियाँ थीं जिस कारण बहनों को भी वहाँ जाने से रोकता था। बहनों ने न तो वहाँ जाना छोड़ा और न ही मुझे वहाँ ले जाने की कोशिश छोड़ी। आखिर एक दिन ऐसा आया कि मुझे वहाँ जाना ही पड़ा।

### सोचा क्या था, हुआ क्या?

हुआ यूँ कि मेरी एक बहन का जन्मदिन आया। उसने मुझे ब्रह्माकुमारी संस्था में चलने का निमंत्रण दिया और कहा, मैं तो अपना जन्मदिन भगवान के घर में ही मनाऊँगी। मैं मना नहीं कर पाया। वहाँ जाकर ब्रह्माकुमारी बहन जी का मीठी वाणी भरा व्याख्यान सुना। कार्यक्रम तो मुझे अच्छा लगा पर मैं जल्दी ही वहाँ से चला आया। मेरी बहन ने कहा, भैया, ब्रह्माकुमारी विद्यालय का सात दिन का कोर्स करो, वो ही मेरे जन्मदिन की सुन्दर सौगात होगी। मैं सात दिन के कोर्स के लिए तैयार हो गया पर शर्त यह रखी कि अगर ज्ञान पसंद नहीं आया तो मेरी दोनों बहनें भी वहाँ जाना छोड़ देंगी। मैं दिल से तो यही चाहता था कि मेरी बहनें वहाँ नहीं जायें इसलिए सोचा कि सात दिन के बाद बहनों का भी जाना बंद करवा दूंगा।

### ज्ञान बहुत अच्छा लगा

लेकिन जैसा मैंने सोचा था, वैसा

नहीं हुआ। **मुझे ज्ञान बहुत अच्छा लगा। वहाँ जाकर मुझे यह पता चला कि मैं कौन हूँ, मेरे पिता कौन हैं, मैं कहाँ से आया हूँ, मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है, कौन-सा समय चल रहा है, मुझे क्या करना चाहिये और क्या नहीं? फिर मैं रोज़ मुरली (भगवान के महावाक्य) सुनने जाने लगा। धीरे-धीरे मुझे बाबा (भगवान) के प्रति तथा मुरली के प्रति इतना स्नेह हो गया कि उनके बिना एक दिन भी रह पाना मुश्किल लगने लगा। व्यसन सब छूट गये। क्रोध भी कम हो गया। नेगेटिव सोच पॉजिटिव में बदल गई।** मुझमें सुधार देख मेरी पत्नी, बहनें और बच्चे भी खुश हो गये। मुझे परमात्मा से जो प्राप्तियाँ हुईं वो मैं शब्दों में लिख नहीं सकता। अब मेरा जीवन सुखमय हो गया है। पहले मेरी आदतों से, व्यवहार से जो लोग परेशान थे, अब वे मेरे में आये परिवर्तन को देख आश्चर्यचकित हैं।

**कहीं आप भी लेट न हो जाएँ**

मुझे लगता है, मैं रास्ता भटक गया था, अब सही दिशा मिली है। अभी सब मुझे मान देने लगे हैं। जो लोग मुझसे नफरत करते थे, वे भी प्यार से बात करने लगे हैं। भगवान की नज़र मुझ आत्मा पर पड़ी, मैं अपना सौभाग्य समझता हूँ। भगवान ने मुझे क्या से क्या बना दिया! दिल गाता है –

**'जाने क्या देखा मुझमें,**
**मुझे प्यार कर लिया,**
**मेरे लाड़ले कहा,**
**आंचल में भर लिया।'**

शुक्रिया बाबा शुक्रिया! मेरी बहनों का भी मैं किन शब्दों में धन्यवाद करूँ जो मुझे सही रास्ते पर लाने के निमित्त बनीं! अब अन्य आत्मायें भी इस राह पर चल अपना जीवन सफल करें, यही मेरी शुभभावना है। मैं तो कहूँगा – 'भाइयो-बहनो, आप भी विकार, व्यसन, बुरी आदतें छोड़कर भगवान की शरण में आ जाओ और अपना जीवन श्रेष्ठ बनाओ। परमात्मा स्वयं आये हैं हमको कांटों से फूल बनाने तो हम इतना अच्छा मौका क्यों जाने दें? यह सुनहरा मौका फिर नहीं मिलेगा। जैसे मुझे लगता है कि मैं बहुत लेट हो गया, वैसे आप भी लेट न हो जाएँ इसलिए अभी कदम उठा लें सही रास्ते पर चलने के लिए।' ❖

# निर्विकल्प ही निर्विघ्न है

**ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, मजलिस पार्क (दिल्ली)**

**निर्विकल्प ही निर्विघ्न है, विकल्प खुद-ही-खुद में विघ्न है,**
निर्विकल्पता का आधार – बीती सो फुलस्टॉप, रूहानी ज्ञान रमण है।
होना है क्रोध मुक्त जरूर, क्रोध करता खुशी का हनन है,
खुश रहिए, खुश रखिए, मुसकराइये, मुसकराहट करती मन सुमन है।
धोती मैल आंतरिक, बनाती मस्त फकीर, निर्मल पवित्रीकरण है,
निर्विकल्प ही योगयुक्त है, सुखी है, निर्माण है, निर्विघ्न है।
**निर्विकल्प ही निर्विघ्न है, विकल्प लाते तनाव और विघ्न हैं।**
अच्छा! हुआ-सो-हुआ, कल्याणकारी है ड्रामा, है यही सत्य कथन है,
करेगा-सो-भरेगा, हम खुशनुमः, मन हर्ष, आनन्दमय, निश्चिन्त मगन हैं।
हम निर्विकारी, निराकारी, हम सफल, श्रेष्ठ, निर्विकल्प, निर्विघ्न हैं,
**निर्विकल्प ही .....**
कहीं कुछ हुआ तो हुआ करे, किसी ने कहा झूठ तो कहा करे
हम तो बस परमात्म-रंग में रंग दुआ करें
यही सोच भगावे क्रोध, घटावे रोष, जगावे होश, जोश उमंग है,
अवस्था यही निर्विघ्न है, निर्विकल्प है, निर्विकल्प ही निर्विघ्न है।
**विकल्प खुद-ही-खुद में विघ्न है, निर्विकल्प ही निर्विघ्न है।**

# पवित्रता ही पात्रता

जब भी कोई व्यक्ति प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय से जुड़ने का प्रयास करता है तो अक्सर वह पवित्रता की बात पर बहस करता है। शुरू-शुरू में मुझे भी पवित्रता की बात काफी अटपटी लगी व स्थिति तर्क-वितर्क में ऊपर-नीचे होती रही। आखिरकार यथा सामर्थ्य स्वयं द्वारा अध्ययन करने से, ज्ञानी आत्माओं के संपर्क से तथा कुछ अन्य माध्यमों से यह पाया कि इसमें कुछ भी गलत नहीं। 'पवित्रता' अध्यात्म की ऊँचाइयों को प्राप्त करने के लिए 'पात्रता' ही नहीं बल्कि नितान्त आवश्यक है। इस पर यह लोकोक्ति बिल्कुल चरितार्थ होती है कि सोने के बर्तन में ही शेरनी का दूध समा सकता है। यह अटूट सत्य दिनांक 02.07.2010 के दैनिक भास्कर के पेज नं. 6 पर 'जीने की राह' शीर्षक के अंतर्गत प्रकाशित हुआ है कि पवित्रता द्वारा ही ध्यान आसानी से लगाया जा सकता है।

**– अजय आहूजा, महम**